सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 362, नई दिल्ली । सोमवार, 10 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कष्ट सहने पर ही हमें अनुभव होता है और दर्द हो, तभी हम सीख पाते हैं।

03 महिला दिवस पर फिट इंडिया पिंक साइक्लोथॉन .....
06 वन उपज से दीर्घकालीन रोजगार का लक्ष्य
08 सीखी हुई असहायता से मुक्तिः आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच से नया जीवन

दिल्ली एवं आसपास के क्षेत्रों में अनाधिकृत मोटर ड्राइविंग ट्रेनिंग स्कूलों की बढ़ती संख्या एवं गुंडागर्दी

संजय बाटला

नई दिल्ली। हमने कल के अंक में आपको बताया था की दिल्ली परिवहन विभाग 2021 से अब तक दिल्ली में नए नियमों के तहत खुलने वाले एमडीटीएस की फाइल को रोक कर बैठा है जिससे दिल्ली की जनता को अपने घरों के आस पास अधिकृत मोटर ड्राइविंग ट्रेनिंग स्कूल उपलब्ध नहीं होता। आज हम आपको बता रहे की इसी कारण से मजबूरी में दिल्ली की जनता अनाधिकृत मोटर ड्राइविंग स्कूलों से प्रशिक्षण लेने को मजबूर हो रही हैं और दिल्ली परिवहन विभाग, दिल्ली पुलिस भी इन पर कोई कार्यवाही नहीं करते। **कही इनकी पहुंच विभाग में उच्चस्तरीय स्तर पर तो नहीं जिस कारण अनाधिकृत मोटर ड्राइविंग ट्रेनिंग स्कूलों की दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में भरमार दिखती है।** दिल्ली एवं आसपास के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में अनधिकृत मोटर ड्राइविंग ट्रेनिंग स्कूल संचालित हो रहे हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित है

1. परफेक्ट एमडीटीएस
2. हरे कृष्णा एमडीटीएस
3. विष्णु एमडीटीएस
4. एनएस एमडीटीएस
5. राम एमडीटीएस,
6. शगुन एमडीटीएस
7. ईगल एमडीटीएस,

विश्वस्त सूत्रों द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार यह सभी एमडीटीएस गैर मान्यता प्राप्त है और दिल्ली में बिना किसी लाइसेंस व परमिट के कार्य कर रहे हैं और दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित एमडीटीएस (MDTS) मानकों का पालन भी नहीं कर रहे हैं। समय-समय पर इन अवैध ड्राइविंग स्कूलों के खिलाफ शिकायत दिल्ली ट्रांसपोर्ट विभाग, दिल्ली ट्रैफिक पुलिस एवं लोकल पुलिस में दर्ज कराई गई है पर कोई कार्यवाही नहीं हुई जिसके कारण एलजी लिसनिंग (LG Listening), पीजीएमएस (PGMS) और अन्य उच्चस्तरीय पोर्टलों पर भी इस संबंध में शिकायत दर्ज कराई गई किंतु कोई कार्रवाई नहीं।

गैर मान्यता प्राप्त एमडीटीएस के होने से उत्पन्न समस्याएं:

1. अनधिकृत रूप से गाड़ी सिखाने वाले लोग बिना किसी योग्यता व सुरक्षा मानकों के ड्राइविंग ट्रेनिंग दे रहे हैं, जिससे सड़क सुरक्षा

को गंभीर खतरा उत्पन्न हो रहा है।

2. अनधिकृत ड्राइविंग स्कूलों को विभाग की छूट प्राप्त होने के कारण उनकी गिनती दिन प्रतिदिन अधिक होती जा रही है जो सड़क सुरक्षा के प्रति गलत है।
3. अनधिकृत ड्राइविंग स्कूलों से प्रशिक्षण लेने के कारण अधिकृत मोटर ड्राइविंग ट्रेनिंग स्कूलों को आर्थिक हानि हो रही है जिस कारण उनका बंद होने के आसार अधिक है।
4. इन अनधिकृत ड्राइविंग स्कूलों के कारण सरकार को राजस्व का नुकसान हो रहा है।

निवेदन:

1. ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट, ट्रैफिक पुलिस एवं लोकल पुलिस इन अवैध ड्राइविंग ट्रेनिंग स्कूलों के खिलाफ कठोर अभियान चलाए,
2. सड़क सुरक्षा एवं ड्राइविंग प्रशिक्षण से जुड़े सभी कानूनों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित कराया जाए,
3. अवैध ड्राइविंग स्कूलों के खिलाफ कार्रवाई करे जिससे जनता प्रशिक्षित एवम् अधिकृत संस्थानों से मोटर वाहन का सही नियमानुकूल प्रशिक्षण प्राप्त करे और सड़क दुर्घटनाओं में कमी आए।

दिल्ली परिवहन विभाग से सेवानिवृत एवम् परिवहन विशेषज्ञ अनिल छिक्कारा ने बताया की 1993 में जब मैंने परिवहन विभाग ज्वाइन किया था तब दिल्ली में 130 एमडीटीएस थे और 2023 में यह कुल 35 ही रह गए। छिक्कारा ने बताया की 1993 में दिल्ली की आबादी 80 लाख थी और वाहन 20 लाख थे और आज 2025 की दिल्ली की आबादी और वाहन कई गुणा बढ़ गए नए और परिवहन विभाग द्वारा नए एमडीटीएस खोलने की जगह पुराने एमडीटीएस को अनुमति देकर बंद करवा दिया, क्यों ? **दिल्ली सरकार ने पिछले 25 वर्षों से सड़क सुरक्षा के संबंध में कोई काम नहीं किया है।** उनके पास सड़क सुरक्षा और ड्राइविंग प्रशिक्षण प्रशिक्षक था और **परिवहन विभाग ने सड़क सुरक्षा का यह खंड भी बंद कर दिया** अभी सड़क सुरक्षा अनुभाग महज औपचारिकता मात्र है, जिसके पास जनता के लिए सड़क सुरक्षा कार्रवाई करने की इजाजत नहीं है। **2013 से सड़क सुरक्षा निधि को डीटीसी मार्शलों को दे दिया गया था और सड़क सुरक्षा पेशे की अनुपस्थिति में किसी भी शहर की तुलना में दिल्ली में सबसे अधिक मौतें होती हैं।** यदि एमडीटीएस अनुमोदन समग्र रूप से प्रदान किया जाता है, तो अनधिकृत एमडीटीएस अस्तित्व में नहीं रहेंगे। दिल्ली को 200 एमडीटीएस की आवश्यकता है।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

दिल्ली के अलावा इन राज्यों में प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर होगी कार्रवाई तेज

नई दिल्ली। परिवहन विभाग की ओर से प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर कार्रवाई तेज की जाएगी। राजधानी में 60 लाख से अधिक उम्र पूरी कर चुके वाहनों का पंजीकरण रद्द किया गया है। इनमें से अधिकतर वाहन को स्क्रैप किया जा चुका है। अधिकारियों का कहना है कि मौजूदा समय में दिल्ली की सड़कों पर कुछ ही ऐसे वाहन बचे हैं जिनकी उम्र पूरी हो गई है, लेकिन पड़ोसी राज्यों में उम्र पूरी कर चुके वाहनों की संख्या अधिक है। ऐसे में इन पर कार्रवाई करने के लिए दिल्ली सरकार ने पड़ोसी राज्यों को पत्र लिखा है।

अधिकारियों ने बताया कि सितंबर 2024 तक हरियाणा में 27,50,152 वाहन उम्र पूरी कर चुके थे। इनमें से 2023 में 220 व 2024 में 2,496 वाहन जब्त किए गए थे। इसी तरह यूपी में 12,38,788 वाहन हैं, जिनमें से 2023 और 2024 में क्रमशः 3,058 व 631 जब्त किए गए। राजस्थान में 6,06,926 वाहनों में से 2023 में 389 और 2024 में 574 जब्त किए गए। सरकार ने पड़ोसी राज्यों से कहा है कि वे उम्र पूरी कर चुके वाहनों कार्रवाई के लिए अभियान चलाएं। दूसरी तरफ राजधानी में उम्र पूरी कर चुके वाहनों को पेट्रोल पंप पर ईंधन नहीं देने को लेकर सीसीटीवी कैमरे लगाने का काम किया जा रहा है। 400 से ज्यादा पंपों पर कैमरे लगाए जा चुके हैं। अभी सॉफ्टवेयर के साथ एकीकरण और परीक्षण का काम चल रहा है। इन कैमरों के जरिये वैध प्रदूषण नियंत्रण (पीयूसी) प्रमाणपत्र के बिना चलने वाले वाहनों की जांच की जा रही है।

दिल्ली मेट्रो बन जाएगी इस साल के अंत तक दुनिया की सबसे लंबी मेट्रो

परिवहन विशेष न्यूज

इस साल के अंत तक किसी एक शहर में सबसे लंबी मेट्रो नेटवर्क का खिताब होगा दिल्ली मेट्रो के पास। यह न्यूयॉर्क मेट्रो के 399 किमी लंबाई को भी पीछे छोड़कर कई किमी आगे बढ़ जाएगी। पर मेट्रो की कौन सी नई लाइन खुलने वाली है, जिसकी वजह से दिल्ली मेट्रो दुनिया की सबसे लंबी मेट्रो नेटवर्क बन जाएगी?

नई दिल्ली। पिछले दिनों ही मंत्री मनोहर लाल ने घोषणा की है कि दिल्ली मेट्रो की 12 किमी लंबी एक नई लाइन खुलने वाली है, जिसके बाद यह नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए दुनिया की सबसे लंबी मेट्रो नेटवर्क बन जाएगी। वहीं बात अगर रैपिड मेट्रो नेटवर्क की करें, तो लगभग 29 राज्यों में यह फैला हुआ है, जो इसे दुनिया का तीसरा सबसे लंबा मेट्रो नेटवर्क बनाता है।

मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से बताया जाता है कि दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (DMRC) फेज 4 के तहत मेट्रो की एक नई भूमिगत लाइन बिछा रही है, जिसका निर्माण पूरा होने के बाद यह दुनिया की सबसे लंबी मेट्रो नेटवर्क कहलाएगी। बताया जाता है कि वर्तमान में दिल्ली मेट्रो का नेटवर्क करीब 394 किमी लंबा है। दिल्ली के तुगलकाबाद से एयरोसिटी मेट्रो कॉरिडोर पर गोल्डन लाइन मेट्रो को शुरू करने की प्रक्रिया तेजी से चल रही है। इसका एक बड़ा कदम किशनगढ़ और वसंतकुंज स्टेशनों के बीच सुरंग बनाने का काम पूरा करने के साथ ही उठाया जा चुका है। संभावना जतायी जा रही है कि इस साल के अंत तक दिल्ली मेट्रो का गोल्डन लाइन का 12 किमी लंबा स्ट्रेच बनकर तैयार हो जाएगा। इसके बनने के साथ ही दिल्ली मेट्रो दुनिया की सबसे लंबी मेट्रो नेटवर्क कहलाएगी।

डीएमआरसी के अधिकारियों ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि वसंत कुंज स्टेशन तक टनल बोरिंग मशीन (TBM) ने सफलतापूर्वक मेट्रो का सुरंग खोद लिया है। बताया जाता है कि TBM ने करीब 1550 मीटर लंबी सुरंग खोदी है। इस स्ट्रेच पर दूसरा सुरंग इस साल जून तक खोद लेने की संभावना जतायी गयी है। बताया जाता है कि दिल्ली मेट्रो के फेज 4 के तहत 40.109 किमी लंबी अंडरग्राउंड मेट्रो लाइन तुगलकाबाद से एयरोसिटी के बीच बिछाई जा रही है।

बताया जाता है कि मार्च 2025 तक दिल्ली मेट्रो 10 रंगों वाली लाइन पर 289 स्टेशनों के बीच लगभग 395 किमी में मेट्रो का संचालन करती है। दिल्ली के बाहर NCR में DMRC जिन शहरों में मेट्रो का संचालन करती है, उनमें शामिल हैं गाजियाबाद, फरिदाबाद, नोएडा, बहादुरगढ़ और बल्लभगढ़। इनमें से कुछ लाइन पर मेट्रो एलिवेटेड कॉरिडोर में और कुछ लाइन पर मेट्रो भूमिगत कॉरिडोर में संचालित होती है। सभी स्टेशनों पर यात्रियों के लिए एस्केलेटर और एलिवेटर दोनों तरह की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

गृह मंत्रालय का सुझाव : खस्ताहाल डीटीसी बसों की खराबी के लिए ले सकते हैं पैरामिलिट्री फोर्सज की मदद

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में डीटीसी बसों में खराबी को दूर करने के लिए पैरामिलिट्री फोर्सेज की मदद ली जा सकती है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा शहर में दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) बसों की खराबी की समस्या को उजागर करने के कुछ दिनों बाद, यातायात पुलिस और परिवहन विभाग इस समस्या से निपटने के लिए केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की मदद लेने पर विचार कर रहे हैं।

दिल्ली में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए उठाए गए कदमों पर नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) की रिपोर्ट, 'दिल्ली में वाहनों से होने वाले वायु प्रदूषण की रोकथाम और शमन 2021' जिसे दिल्ली विधानसभा में पेश किया जाना है, उसमें बताया गया है कि शहर की सड़कों पर भीड़-भाड़ टूटी-फूटी बसों के कारण होती है, जो सड़कों से इन्हें हटाने में लगने वाले समय के कारण और बढ़ जाती है।

गृह मंत्रालय ने दिल्ली सरकार और ट्रैफिक पुलिस को दिया सुझाव

सूत्रों के अनुसार, गृह मंत्रालय ने दिल्ली सरकार और यातायात पुलिस को सुझाव दिया है कि वे सार्वजनिक परिवहन की खराब बसों से निपटने के लिए अर्धसैनिक बलों की मोटर और परिवहन इकाई की मदद ले सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि डीटीसी और यातायात पुलिस अर्धसैनिक बलों जैसे सीमा सुरक्षा बल, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल से 50 ऐसे कुशल मैकेनिकों की मांग कर सकती है, जो डीटीसी टीमों को ऐसी बसों की मरम्मत और सड़कों से उन्हें हटाने में सहायता करेंगे।

दिल्ली में भाजपा के सत्ता में आने के बाद मुख्यमंत्री और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ अपनी पहली बैठक के दौरान अमित शाह ने निर्देश दिया था कि टूटी-फूटी बसों के कारण होने वाले ट्रैफिक जाम को रोकने के लिए डीटीसी को त्वरित प्रतिक्रिया दल तैनात करना चाहिए और अन्य विभागों के साथ समन्वय करना चाहिए ताकि तत्काल मदद ली जा सके और यातायात में बाधा को हटाने में प्रतिक्रिया समय कम किया जा सके।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया, "इन बसों के आकार के कारण इन्हें आसानी से नहीं खींचा जा सकता। क्रेन के खराब होने से ट्रैफिक जाम की वजह से इन्हें वहां तक पहुंचने में समय लगता है।"

खराब बसों की मरम्मत या उन्हें सड़कों से हटाने में कई बार 45 मिनट से लेकर एक घंटे तक का समय लग जाता है।

परिवहन विभाग के अनुसार, खराब बसों की मरम्मत या उन्हें सड़कों से हटाने में कई बार 45 मिनट से लेकर एक घंटे तक का समय लग जाता है। गुरुवार को एक बैठक में यातायात पुलिस ने परिवहन विभाग से अनुरोध किया कि वह खराब बसों को हटाने में लगने वाले समय को कम करने के लिए महत्वपूर्ण मार्गों पर अपनी क्रेन और टीमें तैनात करे।

फिलहाल विभाग के पास डीटीसी और क्लस्टर बसों की मरम्मत के लिए 15 टीमें उपलब्ध हैं। सूत्रों ने बताया कि सीएजी की ऑडिट रिपोर्ट में 2014-2021 की अवधि के दौरान 2,661 खराब बसों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। रिपोर्ट के हवाले से एक सूत्र ने बताया, "यह पाया गया कि सड़कों पर बसों के खराब होने की 3.57 लाख घटनाएं हुईं या औसतन रोजाना 139 घटनाएं हुईं। इनमें से 70% यानी 2.51 लाख मामलों में बसों को हटाने में 30 मिनट से अधिक का समय लगा।"

सूत्र ने कहा, "2.51 लाख मामलों में से 54% मामलों में प्रतिक्रिया समय 31 मिनट से दो घंटे के बीच था. 29% मामलों में दो

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

सुंदरता और सहनशीलता के धनी वृषभ राशि के जातक

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी .)

नक्षत्र मंडल में जब चंद्रमा का गोचर कृतिका के दूसरे चरण से लेकर मृगशिर के दूसरे चरण तक होता है तब ज्योतिष विद्वानों ने वृषभ राशि में गोचर माना है। वृषभ एक स्त्री राशि,स्थिर संज्ञक,भूमि तत्व वाली,शीतल स्वभाव की राशि है। यह कांति रहित,वात प्रकृति वाली,दक्षिण दिशा की स्वामिनी है। इस राशि के जातकों पर शुक्र,चंद्रमा,सूर्य ग्रह का प्रभाव देखने को मिलता है। चंद्रमा वृष राशि में उच्च का तथा केतु नीच का प्रभाव देता है। वृष राशि से कंठ,मुख कपोलों का विचार किया जाता है।

गुण और स्वभाव: वृषभ राशि के लोग प्रायः छोटे कद के या मध्यम कद के, बड़ी बड़ी आंखों वाले रूपवान होते हैं। इनमे आकर्षण शक्ति जबरजस्त होती है। लोग इनकी तरफ स्वतः ही आकर्षित हो जाते हैं।

इनके कान बड़े और कुछ मोटे होते हैं। वृष राशि के लोग असाधारण तौर पर सहनशील, व्यवहारिक, भरोसेमंद,खाना बनाने में माहिर होते हैं। लेकिन कुछ बैल बुद्धि भी देखने को मिलते है जातक क्रोध में काफी उग्र हो जाते है लेकिन यह तभी होता है जब इन्हे बेबजह उकसाया जाए। कभी कभी इस राशि के जातक घमंडी, हठी,कठोर तथा अड़ियल स्वभाव के हो जाते हैं।

कैरियर: वृषभ राशि के जातक आध्यात्मिक गुरु,कुशलवक्ता, मोटीवेटर,बैंक, सेना में इंजीनियर, कुशल प्रबंधक,सांसद, मूर्तिकार,बिल्डर,होटल व्यापार,जौहरी, फलों और सबज़ियों का व्यापारी,परफ्यूम बनाने की फैक्ट्री, कलाकार,गायक,सिनेमा, मॉडल आदि में अपना कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

रोग: वृषभ राशि के लोगो को आंखो से संबधित रोग,गले में सूजन, फोड़ा फुंसी,चेचक, थायरॉयड,शुगर आदि रोग परेशान कर सकते हैं।

भाग्यशाली दिन : सोम,बुध,शुक्रवर और शनिवार

भाग्यशाली रंग : हरा,नीला,सफेद और हल्का गुलाबी

भाग्यशाली अंक :2,7,8,9

उपायः वृष राशि के जातक को शुक्रवार का व्रत तथा शिव जी मां दुर्गा की उपासना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है। प्रत्येक शुक्रवार शिवलिंग पर दही से अभिषेक करने से भाग्य में वृद्धि होती है

वेदो की कुछ मौलिक शिक्षाएं

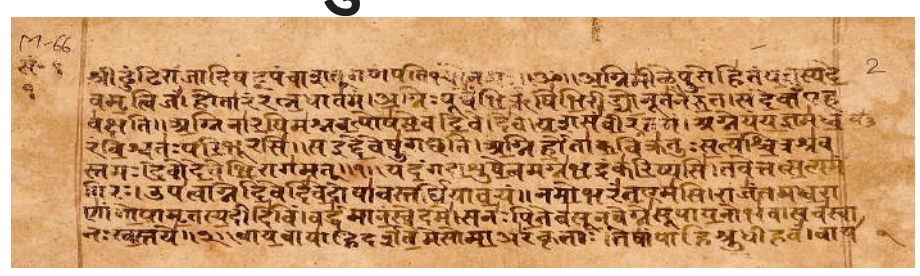

1. हे भगवन ! हम सत्य का पालन करे, झूठ के पास भी न जावे। (ऋ॰ ८।६२।१२)

2. उत्तम मति, उत्तम कृति और उत्तम उक्ति का सदा मानवसमाज में स्थान होना चाहिए। (ऋ॰ १०।१९१।१-४)

3. सभा (राज्यसभा) और समिति (राजा को सलाह देने वाली समिति) प्रजापति (ईश्वर) की पुत्री के सामान हैं। इनमे बैठने पर सत्य और उचित ही सम्मति देनी चाहिए। (अथर्व॰ ७।१२।१)

4. ऋत (शाश्वत सत्य) की प्रकाशरश्मियाँ पूर्ण हैं। ऋत का ज्ञान बुरे कर्मो से बचाता है। (ऋ॰ ४।२ ।८)

5. इन्द्रियां परमेश्वर को नहीं प्राप्त कर सकती हैं। (यजु॰ ४०।४)

6. प्रजा के पालक परमेश्वर ने सत्य और असत्य के स्वरुप का भेद कर सत्य में श्रद्धा और असत्य में अश्रद्धा धारण करने का उपदेश किया है। (यजु॰ १९।७७)

7. अपने ज्ञान और कर्म से मनुष्य परमेश्वर का भक्त बनता है और इन्ही से दुर्गणों से भी दूर रहता है। (ऋ॰ ५।४५।११)

8. कुटिल कर्म अथवा उलटे कर्म का नाम ही पाप है। (ऋ॰ १।१८९।१)

9. हमारा मन सदा उत्तम विचारो वाला ही हो। (यजु॰ ४।१)

10. अतपस्वी मनुष्य कच्ची बुद्धि का होता है अतः वह उस परमेश्वर को नहीं प्राप्त कर सकता है। (ऋ॰ ९।८ ।१)

11. यह शरीर अंत में भस्म हो जाने वाला है। हे जीवात्मन ! तू अपना, अपने कर्म और ओ म का स्मरण कर। (यजु॰ ४०।१५)

12. सत्य, बृहत (बड़े उद्देश्य), ऋत (शाश्वत सत्य), उग्र (तेजस्विता अधृष्यता), तपस (उद्देश्य सहित परिश्रम), दीक्षा (महान कार्य का संकल्प), ब्रह्म (वेद ज्ञान) और यज्ञ (विद्वानो का सम्मान व संगति) ये सब पृथ्वी को (सामाजिक सुख शांति को) धारण करते हैं।

13. मनुष्य बनो और उत्तम संतानो को उत्पन्न करो। (ऋ॰ १०।११४।१०)

14. बहुत संतानो वाला दुःख को प्राप्त होता है। (ऋ॰ १।१६४। २)

15. आत्मघाती अंधकारमय लोको को प्राप्त होता है। (यजु॰ ४०।)

16. सब दिशाए हमारे लिए मित्रवत होवे। (अथर्व॰ १९।५।६)

17. ब्रह्मचर्य और तप से विद्वान लोग अकालमृत्यु को पार करते हैं।

18. हम सदा ज्ञान के अनुसार चले कभी भी इसका विरोध न करे। (अथर्व॰ १।९।४)

19. अपने कानो से हम सदा अच्छी वस्तु सुने, आँखों से अच्छी ही वस्तु को देखे, सदा हष्ट पुष्ट शरीर से स्तुति करे और समस्त आयु उत्तम कर्म के लिए ही हो। (यजु॰ २५।२१)

20. उत्तम कर्म करने वालो का किया हुआ उत्तम कर्म हमारे लिए कल्याणकारी हो। (ऋ॰ ७।९५।४)

नींबू संतरा छिलका उपयोग

नींबू और संतरे के छिलकों को सुखाकर अलमारी में रखा जाए तो इनकी खुशबू से झिंगुर व अन्य कीट भाग जाते हैं। ऐसे सूखे छिलकों को जलाने से जो धुआं होता है उनसे मच्छर मर जाते हैं। इसकी राख से दांत साफ किए जाएँ तो दुर्गंध दूर हो जाती है। नींबू निचोड़ने के बाद बचे हुए हिस्से को त्वचा पर रगड़ने से त्वचा की चिकनाई कम होती है। इसके रगड़ने से मुंहासे भी कम होते हैं और रंग निखरता है। पीतल और तांबे के बर्तन इससे चमकदार बनते हैं।

नींबू के छिलकों को कोहनी और नाखूनों पर रगड़ने से कालापन कम होता है और गंदगी हट जाती है। इन्ही छिलकों को नमक, हींग, मिर्च और चीनी के साथ पीसने से स्वादिष्ट चटनी बनती है। संतरे का रस तो चेहरे को कांतिमय बनाता ही है, छिलकों को यदि छाया में सुखाकर पीसा जाए तो यह उबटन का काम करता है जिससे चेहरे के दाग-धब्बे हटते हैं और त्वचा खूबसूरत बनती है। संतरे के छिलके को पानी में डालकर नहाने से पसीने की दुर्गंध दूर होती है और ताजगी आती है।

कुंडली में 6 खतरनाक दोष

वैसे तो ज्योतिष विद्या में कई तरह के योग और कुंडली के दोष की चर्चा की गई है, परंतु कुछ दोष ऐसे हैं जिस पर अधिक चर्चा होती है और जिसके निवारण पर जोर दिया जाता है ज्योतिषाचार्य के अनुसार इन दोषों के कारण जिंदगी लगभग बर्बाद हो जाती है, आओ जानते हैं इन दोषों में से 6 खास दोषों के बारे में

1. कालसर्प दोष
2. मंगल दोष
3. पितृ दोष
4. गुरु चांडाल दोष
5. विष दोष
6. केन्द्राधिपति दोष

1:-कालसर्प दोष : जन्म के समय ग्रहों की दशा में जब राहु-केतु आमने-सामने होते हैं और सारे ग्रह एक तरफ रहते हैं, तो उस काल को सर्पयोग कहा जाता है। इस आधार पर कालसर्प के 12 प्रकार भी बताए गए हैं। कुछ ने तो 250 के लगभग प्रकार बताए हैं।

2:- मंगल दोष : किसी भी व्यक्ति की जन्मकुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में से किसी भी एक भाव में है तो यह 'मांगलिक दोष' कहलाता है।

3:-पितृ दोष : कुंडली के नौवें में राहु, बुध या शुक्र है तो यह कुंडली पितृदोष की है। कुंडली के दशम भाव में गुरु के होने को शापित माना जाता है। गुरु का शापित होना पितृदोष का कारण है। सातवें घर में गुरु होने पर आंशिक पितृदोष माना जाता है। लग्न में राहु है तो सूर्य ग्रहण और पितृदोष, चंद्र के साथ केतु और सूर्य के साथ राहु होने पर भी पितृदोष होता है। पंचम में राहु होने पर भी कुछ ज्योतिष पितृदोष मानते हैं। जन्म पत्री में यदि सूर्य पर शनि राहु-केतु की दृष्टि या युति द्वारा प्रभाव हो तो जातक की कुंडली में पितृ ऋण की स्थिति मानी जाती है।

4:-गुरु चांडाल दोष : कुंडली के किसी भी भाव में बृहस्पति के साथ राहु बैठा है तो इसे गुरु चांडाल योग कहते हैं।

5:-विष दोष : चंद्र और शनि किसी भी भाव में इकट्ठा बैठे हो तो विष योग बनता है।

6:-केन्द्राधिपति दोष : केंद्र भाव पहला, चौथा, सातवां, और दसवां भाव होता है। मिथुन और कन्या लग्न की कुंडली में यदि बृहस्पति पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव में हो, धनु और मीन लग्न की कुंडली में बुध पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव में हो तो केन्द्राधिपति दोष का निर्माण होता है। दरअसल, बृहस्पति, बुध, शुक्र, और चंद्रमा के कारण यह दोष बनता है।

हथेली की इन रेखाओं से पता चलता है कि कितने साल जिएंगे आप

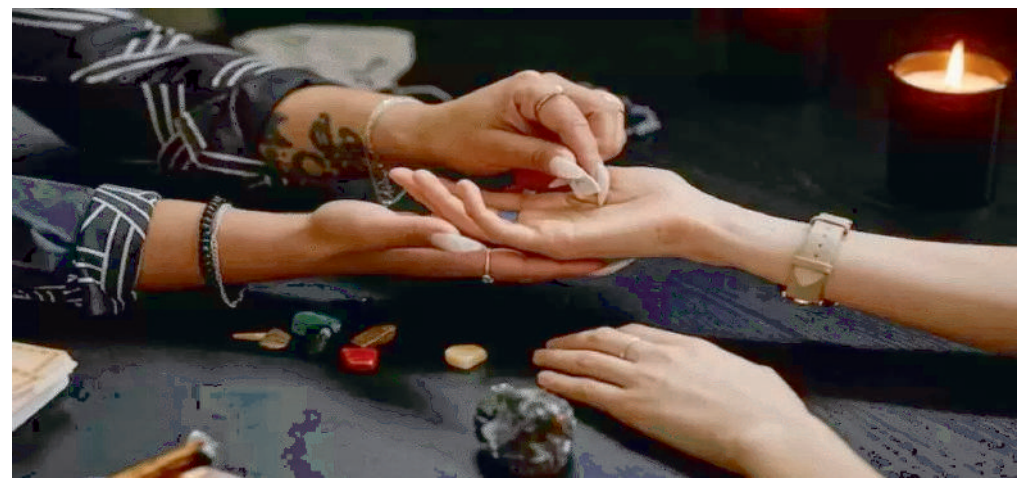

हथेली में कलाई के पास मणिबंध रेखाएं होती हैं। ये रेखाएं आड़ी होती हैं। हस्त रेखा विशेषज्ञों की मानें तो हथेली में मणिबंध रेखाओं की संख्या 1 से 5 तक होती है। हर एक रेखा की औसत आयु 20 से लेकर 25 साल होती है। हस्त रेखा शास्त्र से व्यक्ति के जीवन की सभी जानकारी मिल जाती है। ज्योतिष हथेली की रेखाओं का विश्लेषण कर व्यक्ति के भविष्य की जानकारी देते हैं। इससे करियर, कारोबार, धन, भाग्य, शादी और बच्चे की सभी जानकारी मिल जाती है। हस्त रेखा से यह भी पता चल जाता है कि व्यक्ति की उम्र कितनी होगी ? आसान शब्दों में कहें तो व्यक्ति की आयु कितनी है अगर जानना चाहते हैं तो आइए जानते हैं-

1. हथेली में कलाई के पास मणिबंध रेखाएं होती हैं। यह रेखाएं आड़ी होती हैं। हस्त रेखा विशेषज्ञों की मानें तो हथेली में मणिबंध रेखाओं की संख्या 1 से 5 तक होती है। हर एक रेखा की औसत आयु 20 से लेकर 25 साल होती है।

2. अगर किसी व्यक्ति की हथेली में कलाई के पास एक मणिबंध रेखा है, तो उस व्यक्ति की आयु 20 से 25 साल होगी।

3. अगर किसी व्यक्ति के हाथ में 2 मणिबंध रेखाएं हैं, तो उस व्यक्ति की औसत आयु 45 से 50 साल की हो सकती है।

4. अगर आपकी हथेली में कलाई के पास 3 मणिबंध रेखाएं हैं, तो आपकी आयु 70 साल होगी। आसान शब्दों में कहें तो आपकी आयु 75 साल हो सकती है।

5. जिन लोगों की हथेली में 4 या उससे अधिक मणिबंध रेखाएं होती हैं, उनकी आयु 100 साल होती है। ऐसे लोग दीर्घायु होते हैं। साथ ही शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं।

6. अगर मणिबंध रेखाएं धुंधली हैं या टूटी हैं, तो जातक किसी बीमारी से पीड़ित हो सकता है। वहीं, रेखाएं स्पष्ट हैं और टूटी नहीं हैं, तो जातक सेहतमंद रहता है। ऐसे जातकों को कोई बीमारी नहीं होती है।

7. अगर हथेली में मणिबंध रेखाओं पर द्वीप का निशान बना है, तो जातक अपने जीवन में खूब मान सम्मान कमाता है। साथ ही जातक को सुख और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

सूर्य यंत्र और सूर्य मंदिर

दोनों ही भगवान सूर्य से जुड़े हैं। सूर्य यंत्र को घर या मंदिर में लगाया जाता है, वहीं सूर्य मंदिर वास्तुकला का एक अद्भुत उदाहरण है।

सूर्य यंत्र

1. सूर्य यंत्र को तांबे के भोजपत्र या तामपत्र पर चिपकाकर रखना अच्छा माना जाता है,
2. सूर्य यंत्र को लाल या पीले कपड़े में लपेटकर रखना चाहिए,
3. सूर्य यंत्र को घर के उत्तर दिशा की ओर रखने से हर क्षेत्र में सफलता मिलती है,
4. सूर्य यंत्र को घर के मंदिर में रखने से नवग्रह शांत होते हैं और शुभ परिणाम मिलते हैं,
5. सूर्य यंत्र को नौकरी या व्यापार की जगह पर भी रखा जा सकता है,
6. सूर्य यंत्र को लगाने के बाद नियमित रूप से इसकी साफ़-सफ़ाई करनी चाहिए,
7. हर रविवार को यंत्र के सामने दीप जलाकर पूजा करनी चाहिए.

सूर्य मंदिर

1. कोणार्क का सूर्य मंदिर सबसे अधिक प्रसिद्ध है,
2. मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ ज़िले के मड़खेड़ा गांव में एक प्राचीन सूर्य मंदिर है,
3. उत्तरी आंध्र प्रदेश के छोर पर श्रीकाकुलम ज़िले में अरसावल्ली गांव में एक प्रसिद्ध सूर्य मंदिर है।

रंगभरी एकादशी

हर महीने के कृष्ण और शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि पर व्रत का आयोजन किया जाता है। फाल्गुन माह में मनाई जाने वाली एकादशी को रंगभरी एकादशी कहा जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस व्रत को करने से साधक सभी पापों से मुक्त हो जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार, फाल्गुन की इस एकादशी पर भगवान शिव ने माता पार्वती को काशी ले जाकर उन्हें गुलाल अर्पित किया था। इसी कारण इस एकादशी को रंगभरी एकादशी के नाम से जाना जाता है।

रंगभरी एकादशी तिथि कब ? फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि आरंभः 09 मार्च, रात्रि 07: 45 मिनट से

फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि समाप्तः 10 मार्च, प्रातः 07: 44 मिनट पर

इस प्रकार से 10 मार्च को रंगभरी एकादशी व्रत किया जाएगा।

रंगभरी एकादशी शुभ मुहूर्त ब्रह्म मुहूर्तः प्रातः 04:59 मिनट से 05:48 मिनट तक

विजय मुहूर्त - दोपहर 02:30 मिनट से 03:17 मिनट तक

गोधूलि मुहूर्त - सायं 06: 24 मिनट से 06:49 मिनट तक

निशिता मुहूर्त - रात्रि 12: 07 मिनट से 12:55 मिनट तक

रंगभरी एकादशी व्रत का पारण समय रंगभरी एकादशी व्रत पारण का शुभ मुहूर्तः 11 मार्च, प्रातः 06:35 मिनट से 08:13 मिनट तक है। रंगभरी एकादशी व्रत का पारण करने के बाद श्रद्धा अनुसार अन्न और धन समेत आदि चीजों का दान करना चाहिए। धार्मिक मान्यता है कि दान करने से साधक को जीवन में किसी भी चीज की कमी का सामना नहीं करना पड़ता है।

रंगभरी एकादशी का महत्व रंगभरी एकादशी के दिन भगवान विष्णु के साथ-साथ भोलेनाथ और मां पार्वती की पूजा की जाती है। इस दिन व्रत रखने से सुख और समृद्धि की प्राप्ति होती है। आंवले के पेड़ की भी इस दिन विधिपूर्वक पूजा की जाती है। रंगभरी एकादशी पर किसी मंदिर में आंवला वृक्ष लगाना अत्यंत शुभ माना जाता है। इसके अलावा, इस दिन काशी विश्वनाथ की नगरी वाराणसी में भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना की जाती है। रंगभरी एकादशी के व्रत का पारण करने के बाद श्रद्धा के अनुसार अन्न, धन और अन्य वस्तुओं का दान करना चाहिए।

रंगभरी एकादशी का भगवान शिव और माता पार्वती से संबंध रंगभरी एकादशी के अवसर पर भगवान विष्णु के साथ-साथ भगवान शिव और माता पार्वती की विशेष पूजा की जाती है. इस दिन व्रत रखने से व्यक्ति को सुख और समृद्धि की प्राप्ति होती है. आंवले के वृक्ष की पूजा भी इस दिन विधिपूर्वक की जाती है. रंगभरी एकादशी पर किसी मंदिर में आंवला वृक्ष का रोपण करना अत्यंत शुभ माना जाता है. इसके अतिरिक्त, वाराणसी में काशी विश्वनाथ के साथ माता पार्वती की आराधना भी इस दिन की जाती है. रंगभरी एकादशी के व्रत का पारण करने के बाद श्रद्धा के अनुसार अन्न, धन और अन्य वस्तुओं का दान करना चाहिए।

डिजिटल होली में रमती-बसती हमारी युवा पीढ़ी !

सुनील कुमार महला

होली रंगों का त्योहार है। इस बार शुक्रवार 14 मार्च को होली है हर साल होली का त्योहार चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि को मनाया जाता है। होलिका दहन के दिन को छोटी होली के नाम से भी जाना जाता है। हिंदू पंचांग के अनुसार, फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में होलिका दहन किया जाता है।पाठक जानते होंगे कि हिरण्यकश्यपु के कहने पर होलिका भक्त प्रह्लाद को मारने के लिए अपनी गोद में बैठाकर अग्नि में प्रवेश कर गई, लेकिन भगवान विष्णु की कृपा से भक्त प्रह्लाद तो बच गया और होलिका जल गई। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि होली प्राकृतिक व कृत्रिम रंगों से खेली जाती है, समय के साथ होली खेलने के स्वरूप में भी बदलाव आए हैं। समय बदला तो होली त्योहार मनाने का ढंग व स्वरूप भी बदल गया। पहले फाल्गुन के महीना शुरू होते ही चंग, बांसुरी,ढफ, ढ़ोल , नगाड़ा, स्वांग निकालना, होली पर धमाल गीत, हुड़दंग बाजी, हंसी-ठिठोली होती थी, आज भी होती है लेकिन पहले की तुलना में काफी कम है। आज का युग सोशल नेटवर्किंग साइट्स का युग है, इंटरनेट, मल्टीप्लेक्स, एंड्रॉयड मोबाइल फोन, लैपटॉप-कंप्यूटर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) या यूं कहें कि सूचना क्रांति, तकनीक और नवाचारों को अपनाने का युग है। ऐसे युग में वर्तमान में हमारी युवा पीढ़ी होली के दिन नशा करने, देर रात्रि तक डीजे पर डांस करने, और फूहड़ तथा पाश्चात्य संस्कृति के गीतों पर एंजॉय करने में ही अपनी वाहवाही समझते है। आज के समय में हमारा देश तेजी से डिजीटलीकरण की ओर अग्रसर हो रहा है। अब होली के दूसरे दिन यानी कि धुलंडी के दिन (रंग खेलने का दिन) भी अपने घरों से बाहर नहीं निकलते हैं। न पहले जैसी हुड़दंग बाजी रही है,न हंसी-ठिठोली और न ही रंग डालने, स्वांग रचने, धमाल गीत गाने जैसी परंपराएं ही अब रहीं हैं। डिजिटल प्रगति के साथ इन सबमें अभूतपूर्व कमी आई है और हमारे तीज-त्योहार भी अब कहीं न कहीं इस अंधी डिजीटलीकरण व्यवस्था में रच-बस से गये हैं। आज सोशल मीडिया जैसे वाटसअप, फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम पर ही अपने यार-दोस्तों, रिश्तेदारों और परिजनों को गुलाल-अबीर (रंग) और रंग-बिरंगी पिचकारी भेज कर होली का डिजिटल आनंद लेते हैं। और तो और किसी मैसेज की भांति ही अब तो तीज-त्योहारों के अवसरों पर मिठाई तक भी सोशल नेटवर्किंग साइट्स के ज़रिए ही भेज दी जाती है। होली पर भी ऐसा ही कुछ हो रहा है, किया जा रहा है। पाठकों को यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं होगा कि अब तो धुलंडी का दिन (रंग खेलने का दिन) बीतने के बाद नहाने तक के लिए साबुन, शैंपू और पानी की बाल्टियां,टब तक भी डिजीटली ही भेजे जाने लगे हैं। यह बात सुनने में अजीब लग सकती है, लेकिन यह एक कटु सत्य है कि आजकल के सोशल मीडिया और इंटरनेट वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के बढ़ते चलन के साथ, अब ऑनलाइन होली(डिजिटल होली) मनाना आम बात सी हो गई है। आज के समय में रचनात्मक प्लेटफ़ॉर्म और सोशल मीडिया एडिटिंग ऐप रंगों और ख़ुशियों के त्योहार होली के मौक़े पर ख़ास स्टिकर्स, ब्रश तथा रिप्ले जारी करने लगे हैं। पिक्स आर्ट अनेक प्रकार के होली स्टीकर्स जारी कर रहा है। आज तो होली खेलने के अनेक एप्स बिखरे पड़े हैं। कोरोना काल में लोग एक दूसरे से दूरी बनाकर मिलने के लिये मजबूर क्या हुए,होली खेलने के अनेक एप्स बाजार में आ गए। आज लोग इन एप्स और स्टिकर्स के ज़रिये एक दूसरे को डिजिटल अबीर-गुलाल से सराबोर कर रंगों का त्योहार ऐसे मना सकते हैं, जो शायद पहले कभी नहीं मनाया होगा। आज लोग ख़ास मौकों पर डिजिटल माध्यम के ज़रिये अपने प्रियजनों को बधाई व शुभकामनाएं देने में अपनेपन का एहसास महसूस करने लगे हैं। पिक्सआर्ट के स्टिकर्स, रिप्लेज़, मास्क और ब्रश के ज़रिये रंगों से बिना कोई ज़ोख़िम उठाये होली का त्योहार मना सकते हैं। रंगों के इस त्यौहार पर कोई भी अपने प्रियजनों, रिश्तेदारों को अपनी पसंद के रंगीन स्टिकर्स भेजकर, पिचकारी व डिजिटल मिठाई भेजकर होली की बधाई दे सकते हैं। इसका सीधा सा मतलब यह है कि आज के समय में डिजिटल तकनीकों ने सूदूर निवास करने वाले अपने प्रियजनों, रिश्तेदारों के लिए बिना उनसे शारीरिक रूप से(फिजीकली) मिले ही होली के रंग खेलना, शुभकामनाएं व मिठाई भेजना और हंसी-ठिठोली करना संभव बना दिया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि पिक्सआर्ट के साथ आज के इस डिजिटल समय में हम अपनी कल्पनाशीलता से कोई भी तरह का रंगीन डिज़ाइन बनाकर ख़ुशी, उमंग व पूरे उत्साह व उल्लास के साथ घर बैठे ही होली मना सकते हैं। सच तो यह है कि आज होली ही नहीं हमारे देश के त्योहारों पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स का आक्रमण हो चुका है। आज होली खेलने के लिए न घर से बाहर कहीं मैदान या गली मोहल्लों में जाने की आवश्यकता

रही है और न ही कहीं सूदूर क्षेत्र की यात्रा करने की ही आवश्यकता रही है। आज घर पर बैठे-बैठे ही एंड्रॉयड मोबाइल, लैपटॉप हाथ में लेकर होली खेली जा सकती है। सच तो यह है कि डिजिटल क्रांति के इस युग में त्योहार तो क्या हर रिश्ते को एंड्रॉयड मोबाइल, लैपटॉप पर ही निपटा दिया है। डिजिटल क्रांति के इस युग में न तो अब कपड़े धोने का झंझट रहा है और न ही रंगों से स्किन ख़राब होने का भय। पहले होली के दिन रंग खेलने के लिए लोग सिर्फ अपनी गली मोहल्ले तक ही सीमित थे। आज इंस्टाग्राम, वाट्सएप्प एवं फेसबुक(सोशल नेटवर्किंग साइट्स) के इस युग में वे घर पर बैठे-बैठे ही मोहल्ला छोड़िए, पूरी दुनिया संग इको फ्रेंडली के साथ-साथ याकेट फ्रेंडली होली भी मनाने लगे हैं। न हींग लगे और न ही फिटकरी। डिजिटल होली लोगों को असली होली की तुलना में पसंद आने लगी है, लेकिन ऐसा करके हम हमारी त्योहारी संस्कृति, परंपराओं, हमारे सांस्कृतिक विरासत से कहीं न कहीं दूर होते चले जा रहे हैं। आज होली के रंग डिजीटलीकरण में उड़ रहें हैं, वास्तव में धरातल पर नहीं। या यूं कहें कि ग्राउंड में होली कम खेलने को तवज्जो दी जा रही है। बहरहाल, यहां यह कहना बिलकुल भी ग़लत नहीं होगा कि हमारे आधुनिक जीवन में प्रवेश करने वाली रचनात्मक तकनीक ने हमारे तीज-त्योहारों को मनाने के हमारे तरीकों को भी आज काफी हद तक बदल दिया है। आज डिजिटल रंगोलियां सजाई जाती हैं। वर्चुअली रंग खेले जा रहे हैं, वास्तविक रंगों को स्थान बहुत कम रह गया है।सच तो यह है कि आज के सूचना क्रांति और तकनीक के इस युग में होली के पर्व पर जितनी डिजीटल पिचकारियां चल रहीं हैं, धरातल पर उसका प्रतिशत बहुत ही कम रह गया है। संक्षेप में कहें तो आज एआई युग में होली जैसे बड़े व पावन त्योहार पर हर कोई असलियत में रंगों से भरी पिचकारी से खेलें या नहीं खेलें, लेकिन सोशल मीडिया पर पिचकारी भर कर अपनों पर खूब रंग बिखेर रहे हैं। अंत में यही कहूंगा कि अगर हमें अपने त्योहारों की पवित्रता बचानी है तो हमें कम से कम इन्हें बाजार पैसे के मकड़जाल, आधुनिकता से बचाकर रखना होगा। त्योहार हमारे देश की संस्कृति और परंपराओं से जुड़े हुए हैं। समय के साथ बदलाव कुछ हद तक ठीक कहें जा सकते हैं लेकिन ये इतने अधिक न हों कि त्योहारों का कोई औचित्य या अर्थ ही न रह जाए। होली के त्योहार पर एक दूसरे के यहां प्रत्यक्ष जाकर आपसी मेलजोल, सौहार्द, सद्भावना,प्रेम, प्यार और रिश्तों की धुरी पर जो रंग लगाए जाते हैं, वे सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर जाकर कभी भी नहीं लगाए जा सकते हैं। वर्चुअल वर्ल्ड, आखिर वर्चुअल वर्ल्ड ही होता है, वहां भावनाएं नहीं होतीं हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि त्योहार हमारे सांस्कृतिक, पारंपरिक जीवन को हरा-भरा करते हैं। ये हमारी सनातन भारतीय संस्कृति, परंपराओं का अभिन्न हिस्सा ही नहीं, बल्कि हमारी धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के भी प्रतीक हैं। पर्व किसी भी धर्म या संप्रदाय का क्यों न हो, हम सभी भारतवासी उसे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। एक-दूसरे को बधाइयां और शुभकामनाएं देते हैं। प्रत्यक्ष बधाई व शुभकामनाएं देना, रंग लगाना एक अलग बात है और वर्चुअली रंग लगाना एक अलग बात है, हमें इस बात को समझना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि घर के बने पकवान और मिष्ठान से जो स्वागत-सत्कार हो सकता है,वह वर्चुअली भेजी गई मिठाई से कभी संभव नहीं हो सकता है। वर्चुअल वर्ल्ड पर बनावटीपन दिखता है, वह वास्तविक वर्ल्ड नहीं है। आज तकनीक का बाजार हमारी संवेदनाओं का अतिक्रमण कर रहा है।आपस में सौहार्द और सद्भावना के साथ मिलकर होली खेलने में जो आनंद है,उस आनंद की अनुभूति वर्चुअल वर्ल्ड में कभी भी संभव नहीं हो सकती है, भले ही तकनीक के क्षेत्र में हम कितनी भी प्रगति और तरक्की क्यों न कर लें। वास्तव में हमें हमारी सनातन संस्कृति, परंपराओं का निर्वहन करते हुए पुनः सात्विक, सादगी भरे त्योहार मनाने की ओर लौटना होगा, तभी हमारी सनातन संस्कृति, संस्कार व त्योहारों को मनाने का सही अर्थ होगा और हम स्वयं को अधिक आनंदित, उल्लास से पूर्ण महसूस कर सकेंगे।

फिट इंडिया पिंक साइक्लोथॉन दूसरा संस्करण

महिला दिवस पर गुलाबी हुई दिल्ली : महिलाओं के सम्मान में विशाल साइकिल रैली व महिला स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाया गया...

अमित कुमार

नईदिल्ली। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर "फिट इंडिया पिंक साइक्लोथॉन" के दूसरे संस्करण का सफल आयोजन किया गया। "स्वस्थ नारी, समृद्ध भारत" विषय पर आधारित इस महिला स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम को भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) का प्रमुख सहयोग मिला।

राष्ट्रीय फिट इंडिया अभियान के तत्वावधान में आयोजित इस पिंक साइक्लोथॉन में 600 से अधिक साइकिल चालकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दिल्ली के विभिन्न समुदायों, आयु समूहों के पुरुष, महिलाएं और बच्चे इस आयोजन में शामिल हुए।

कार्यक्रम का भव्य उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री नदीम अहमद डार, उप निदेशक, भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) के कर-कमलों द्वारा हुआ। उनके साथ विशेष अतिथि के रूप में श्री देबमाल्य बनर्जी (आईसीसी), श्री पुनीत मदान (यूसेना हेल्थ साइंसेज) भी मौजूद थे।

इस वर्ष के आयोजन की विशेषता महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए समर्पित एक व्यापक स्वास्थ्य जांच शिविर था। इनमें प्रमुख रूप से स्तन कैंसर स्क्रीनिंग शिविर शामिल था, जहाँ चिकित्सकों ने लाभार्थियों को आवश्यक जांच सेवाएं प्रदान कीं। इस पहल ने स्तन कैंसर की शीघ्र पहचान के महत्व के बारे में महत्वपूर्ण जागरूकता बढ़ाई।

"अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, हम चाहते हैं कि पुरुष, महिला और ट्रांसजेंडर सहित सभी लोग महिलाओं के स्वास्थ्य और फिटनेस को बढ़ावा देने की दिशा में काम करें। हम यहां पेशेवर साइकिलिंग नहीं कर रहे हैं, लेकिन हम परिवारों और आम जनता से 'स्वस्थ महिला स्वस्थ राष्ट्र' के उद्देश्य से इस आयोजन का समर्थन करने के लिए कहते हैं..."

– तहसीन जाहिद

स्पोर्ट्स, फिजिकल एजुकेशन, फिटनेस एंड लीजर स्किल्स काउंसिल (एसपीईएफएल-एससी) के सीईओ

इसके अतिरिक्त, आयोजन में समग्र सशक्तिकरण के उद्देश्य से मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े सत्र भी आयोजित किए गए। प्रतिभागियों को तनाव प्रबंधन, भावनात्मक स्वास्थ्य और मानसिक शक्ति के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। साथ ही जुम्बा जैसी गतिविधियों ने आयोजन को और भी आकर्षक बनाया।

इस आयोजन के सफल आयोजन में दानी फाउंडेशन, कॉस्को, यूसाना, टोरेक्स, SheThePeople, इमोटोरैड, रेअरिटी, सविप्ता, निरामई, एनीटाइम फिटनेस, स्टेडफास्ट, मैत्री कॉलेज तथा यथार्थ अस्पताल जैसे संस्थानों का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

साइक्लोथॉन की रैली दानी फाउंडेशन से शुरू होकर कॉस्को, यूसाना, टोरेक्स, शी द पीपल, इमोटोराड, रेअरिटी, सविप्ता, निरामई, एनीटाइम फिटनेस, स्टेडफास्ट, मैत्री कॉलेज और यथार्थ अस्पताल के समर्थन से सफलतापूर्वक संपन्न हुई। साइकिल चालकों का सफर दिल्ली के प्रसिद्ध स्थलों जैसे खेल प्राधिकरण से आरंभ होकर तिलक मार्ग, तिलक मार्ग, आईसीसी गेट, तिलक मार्ग, तिलक मार्ग होते हुए पुनः प्रारंभिक बिंदु तक रहा। जनता ने इस पहल की सराहना करते हुए प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाया, जिससे यह आयोजन महिलाओं की शक्ति, दृढ़ संकल्प और सामुदायिक एकजुटता का प्रतीक बन गया।

एन डी एम सी उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चाहल ने खान मार्केट का निरीक्षण किया

सुषमा रानी

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) के उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल ने रविवार को खान मार्केट का पुनः निरीक्षण किया। यह दौरा एनडीएमसी के विभिन्न विभागों के प्रमुखों, रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशनों और मार्केट ट्रेडर्स एसोसिएशनों के साथ किया गया। इसका उद्देश्य वर्तमान और प्रस्तावित विकास कार्यों की समीक्षा करना था, जिससे बाजार की आधारभूत संरचना, सौंदर्य और समग्र अनुभव को उन्नत किया जा सके।

निरीक्षण के दौरान चहल ने कहा कि खान मार्केट एक प्रमुख शॉपिंग डेस्टिनेशन ही नहीं, बल्कि राजधानी के केंद्र में एक उच्च श्रेणी की जीवनशैली का प्रतीक भी है।

उन्होंने समानता, स्थिरता और विश्वस्तरीय नागरिक सुविधाओं के महत्व पर जोर देते हुए एनडीएमसी की योजना-बद्ध, आकर्षक और पैदल यात्रियों के अनुकूल शहरी क्षेत्र विकसित करने की प्रतिबद्धता दोहराई। चहल ने बताया कि खान मार्केट में फैली स्वच्छता संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए सभी जर्जर, टूटे और पुराने कचरा डिब्बों को बदल दिया गया है। इनकी जगह नए, आधुनिक और टिकाऊ डस्टबिन लगाए गए हैं, जिससे बाजार की स्वच्छता बनी रहे और कचरा प्रबंधन अधिक प्रभावी हो।

चहल ने बताया कि बाजार में सभी

दुकानों के डिस्प्ले बोर्ड एक समान आकार और डिज़ाइन के होंगे, जिससे बाजार की दृश्य अपील बढ़ेगी। सार्वजनिक शौचालय सुविधाओं का उन्नयन होगा दो सार्वजनिक शौचालयों का नवीनीकरण आधुनिक फिटिंग्स, फिक्स्चर्स और टाइल्स के साथ पूरा किया गया है।

तीसरे शौचालय का नवीनीकरण कार्य जारी है, जो जल्द ही पूरा होगा। इसके अतिरिक्त एक पुरुषों के मूत्रालय और एक महिलाओं के शौचालय का उच्च गुणवत्ता वाली सुविधाओं के साथ नवीनीकरण किया गया है। एक अन्य पुरुषों के शौचालय का नवीनीकरण कार्य प्रगति पर है और यह 17 मार्च तक पूरा हो जाएगा।

उन्होंने बातया कि दुकानों के बाहरी स्वरूप में सुधार किया जाएगा।दुकानों के सामने एकरूप कार्पेट बिछाए जाएंगे, जिससे बाजार को एक सुसंगठित और सौंदर्यपूर्ण रूप दिया जा सके। मध्य लेन के बुनियादी ढांचे का उन्नयन

प्री-कास्ट डक्ट्स स्थापित किए जा रहे हैं, जिससे बिजली के तार, जल आपूर्ति पाइपलाइन और गैस पाइपलाइन जैसी आवश्यक सेवाओं को व्यवस्थित किया जा सके और भविष्य में रखरखाव में आसानी हो। फर्श को उच्च गुणवत्ता वाले चिज़ल्ड ग्रेनाइट ब्लॉक्स से अपग्रेड किया जाएगा, जिससे इसकी मजबूती और सुंदरता में वृद्धि होगी।सड़क और पार्किंग क्षेत्र का सुधार

आसपास की सीसी सड़कों को कोटिंग और एपॉक्सी कोटिंग के साथ अपग्रेड किया जा रहा है। इसके अलावा, साफ-सुथरे रोड मार्किंग भी किए जाएंगे जिससे यातायात व्यवस्था सुगम हो।

खान मार्केट पार्किंग क्षेत्र को ईको-फ्रेंडली ग्रास पेवर्स के साथ विकसित किया जा रहा है, जिससे जल निकासी में सुधार होगा और बाजार में हरियाली को बढ़ावा मिलेगा

भाजपा का 8 मार्च को महिलाओं को 2500 रुपए देने का वादा जुमला निकला- आप

सुषमा रानी

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए देने की भाजपा की गारंटी जुमला साबित होने के बाद आम आदमी पार्टी ने भाजपा की नियत पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। ₹आपऱ का कहना है कि भाजपा की विपदा सरकार ने एक कमेटी बनाकर दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए देने की स्कीम को ठंडे बस्ते में डाल दिया है। 8 मार्च को 2500 रुपए देने का पीएम मोदी का वादा जुमला साबित हो चुका है। पीएम मोदी ने दूसरा वादा दिल्लीवालों को 500 रुपए में सिलेंडर और होली-दिवाली पर एक-एक सिलेंडर मुफ्त देने का वादा किया था। पांच दिन बाद होली है। भाजपा दिल्लीवालों को होली पर मुफ्त सिलेंडर देकर पीएम मोदी की दूसरी गारंटी पूरी करे। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री व नेता विपक्ष आतिशी का कहना है कि पीएम मोदी ने 2500 रुपए को लेकर जानबूझ कर झूठ बोला और महिलाओं को धोखा दिया। अब दिल्ली समेत पूरे देश के लोग उनकी किसी गारंटी पर भरोसा नहीं करेंगे।

नेता विपक्ष आतिशी ने पीएम मोदी की गारंटी जुमला साबित होने के बाद रविवार को मीडिया से बातचीत में कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वादा किया था कि 8 मार्च को दिल्ली की सभी महिलाओं के खाते में 2500 रुपए की राशि पहुंच जाएगी। उन्होंने महिलाओं से कहा था कि अपने फोन नंबर को बैंक खाते से लिंक करा लीजिए, 8 मार्च को मोबाइल पर मैसेज आएगा कि बैंक खाते में 2500

रुपए पहुंच गए हैं। 8 मार्च को भाजपा सरकार की कैबिनेट बैठक हुई। इसमें महिलाओं को 2500 रुपए देने की दूर की बात रही, कौन पात्र है, इसका भी फैसला नहीं हुआ। महिलाओं का कब रजिस्ट्रेशन शुरू होगा, यह भी नहीं पता है और रजिस्ट्रेशन शुरू करने के लिए एक पेज की वेबसाइट तक नहीं बनी है।

नेता विपक्ष आतिशी ने कहा कि शनिवार को हुई कैबिनेट बैठक में चार मंत्रियों की एक समिति बनी। सभी लोग जानते हैं कि इस देश में जब किसी चीज को ठंडे बस्ते में डालना होता है तो एक सरकारी समिति का गठन हो जाता है और भाजपा ने भी यही काम किया है। भाजपा ने महिलाओं को 2500 देने की योजना को कमेटी बनाकर ठंडे बस्ते में डाल दिया है। यह बिल्कुल साफ है कि पीएम मोदी की गारंटी जुमला निकली, पीएम मोदी का वादा झूठा निकला, पीएम मोदी ने दिल्ली की महिलाओं को धोखा दे दिया। इसलिए आज के बाद दिल्ली समेत पूरे देश के लोग पीएम की गारंटी पर भरोसा नहीं करेंगे।

आप के वरिष्ठ नेता व पूर्व कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि प्रधानमंत्री की बात अपने आप में बहुत वजन वाली बात होती है। प्रधानमंत्री की जगह अगर भाजपा का दिल्ली का कोई नेता होता तो उस पर दिल्लीवाले विश्वास नहीं करते। देश के प्रधानमंत्री ने वादा किया था कि 8 मार्च से पहले दिल्ली की महिलाओं के खाते में 2500 रुपए आने शुरू हो जाएंगे। 8 मार्च निकल चुका है, लेकिन दिल्ली की एक भी महिला के खाते में पैसे नहीं आएंगे। भाजपा का दूसरा वादा था कि दिल्लीवालों को 500 रुपए में गैस सिलेंडर मिलेगा और होली-दिवाली के त्यौहार पर एक सिलेंडर मुफ्त मिलेगा।

अब पांच दिन बाद होली है। भाजपा अब ये न करे कि होली वाले दिन एक और कमेटी बना दे और कमेटी तय करेगी कि किसको मुफ्त सिलेंडर मिलेगा। भाजपा होली पर मुफ्त सिलेंडर देने का वादा पूरा करे। इसके लिए भी एक कमेटी दिल्लीवालों न दे। पीएम मोदी ने दिल्लीवालों को बाकायदा एक तारीख दी थी। इससे पहले पीएम मोदी ने देश की जनता को कहा था कि सबको 15 लाख रुपए देंगे, हर साल दो करोड़ नौकरियां देंगे, 2022 तक सबको पक्के मकान मिल जाएंगे लेकिन इनमें से कोई भी वादा पूरा नहीं हुआ।

वहीं, इस मुद्दे पर आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता व हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष सुशील गुप्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री, दिल्ली की मुख्यमंत्री समेत भाजपा के सभी वरिष्ठ नेताओं ने घोषणा की थी कि पहली कैबिनेट की बैठक में दिल्ली की महिलाओं के लिए 2500 रुपए प्रतिमा देने की योजना को पास करेंगे और 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं के खाते में पहली किश्त आ जाएगी। इन्होंने पहली कैबिनेट की बैठक में योजना पास नहीं की। फिर महिलाओं को उम्मीद थी कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर यह राशि में उनके खाते में आनी शुरू हो जाएगी, लेकिन नहीं आई। भाजपा अपने वादे को पूरा करे। सिर्फ कमेटी बनाने से नहीं होगा। पांच साल का बहुत कम समय होता है। जिन घोषणाओं के दम पर दिल्ली में भाजपा की सरकार बनी है, उन घोषणाओं को पूरा करें।

तनाव से मुक्ति के लिए एकात्म अभियान के साथ कानपुर में अग्रसर संस्था हार्टफुलनेस की टीम रामवीर यादव

– भारत सरकार के संस्कृतिक मंत्रालय के निर्देश पर लगातार हो रहा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

सुनील बाजपेई

कानपुर। दीर्घायु और और शारीरिक स्वस्थता के लिए अगर कोई ईश्वरीय वरदान है तो वह है योग और इस योग में भी प्राणायाम और ध्यान ही ऐसा है जो कि तनाव और चिंता से निजात दिलाने के मामले में किसी रामवाण से कम नहीं।

दरअसल यह प्राणायाम और ध्यान योग ही है ,जो पशु मानव से मानव एवं मानव से देव मानव बनने की दशा में आगे बढ़ने में सफलता प्रदान करता है। यहां तक कि ध्यान और प्राणायाम के महत्व को समझते हुए केंद्र और प्रदेश सरकार भी इस दिशा में सार्थक और सफल भूमिका निभा रही है। मसलन

भारत सरकार के संस्कृतिक मंत्रालय एवं श्री राम चन्द्र मिशन हार्टफुलनेस इंस्टिट्यूट के संयुक्त तत्वाधान में सहज मार्ग के संस्थापक पूज्य श्री बाबूजी महाराज की 125वीं जयंती के अवसर पर ग्रामीण स्तर पर एकात्म अभियान चलाने के लिए गए निर्णय के मुताबिक इसका उद्देश्य ध्यान और योग के माध्यम से लोगों की विचारधारा में सकारात्मक परिवर्तन कराते हुए उनके हृदय को प्रसन्न और स्वस्थ रखना है।

इस अभियान का प्रारंभ स्थानीय स्तर पर मुख्य विकास अधिकारी दीक्षा जैन और हार्टफुलनेस इंस्टिट्यूट के संयुक्त तत्वाधान में सरसौल ब्लॉक से किया गया। दयानन्द विहार स्थित हार्टफुलनेस इंस्टिट्यूट के ध्यान केंद्र से इसका शुभारंभ संस्थान के वयोवृद्ध स्वयंसेवक रामजी पाण्डेय एवं राम मल्होत्रा द्वारा झंडी दिखा कर किया गया।

अगर हार्टफुलनेस संस्था की बात करें तो यह कर्म और ईश्वरी सत्ता में विश्वास रखने वाले रामवीर सिंह जैसे व्यवहार कुशल समाजसेवी प्रशिक्षकों के जरिए ईश्वर साक्षात्कार की दिशा में एक सरल एवं आसान पद्धति से लोगों की परिचित कराती है। इसके अलावा हार्टफुलनेस संस्था किसानों को वायओचार के मध्यम से उनकी उपज बढ़ाने के तरीके भी बताती है।

इस दिशा में जारी सफल प्रयासों के क्रम में भारत सरकार के सहयोग से उत्तर प्रदेश के सचिव मुकेश मेश्राम के आदेश से सीडीओ श्री मती नेहा जैन द्वारा कानपुर के प्रत्येक ग्राम पंचायत में हार्टफुलनेस के स्वयं सेवी लोगों के सहयोग से ध्यान योग के कार्यक्रम आयोजित किए जाने का सिलसिला अपने आप में कम सराहनीय नहीं।

फिलहाल तनाव मुक्त और स्वस्थ जीवन के लिए हर दिन ध्यान हर दिल ध्यान ध्येय वाक्य के साथ भारत सरकार के तत्वाधान में चलाए जा रहे ₹एकात्म अभियान₹ और रामवीर सिंह तथा रंजना यादव की अगुवाई वाली संस्था हार्टफुलनेस का देश और समाज के हित में यह सफल प्रयास लगातार जारी है ,जिसके क्रम में प्रशिक्षक रामवीर सिंह, रंजना यादव, कुलदीप एवं निर्मला यादव द्वारा ग्राम पंचायत केंधा, गढ़ी सुजानपुर एवं सोना ब्लॉक कल्याणपुर के क़रीब 165 लोगों को तीन दिवस का प्रशिक्षण देकर स्वास्थ्य और तनाव मुक्त जीवन की दिशा में सफलता पूर्वक अग्रसर किया जा चुका है।

जहांगीरपुरी आरडब्ल्यूए ने मनाया होली मंगल मिलन समारोह

नई दिल्ली। दिल्ली के जहांगीरपुरी इलाके में आई और जे ब्लॉक जहांगीरपुरी आरड़ब्लुए के द्वारा होली मंगल मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम की अध्यक्षता आरड़ब्लुए के अध्यक्ष एम. एल भास्कर ने की। इस मौके पर भास्कर ने कहा कि होली रंगो का त्यौहार है, हम सभी को प्रेम व सद्भाव के साथ इसे मनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर सभी के जीवन में अपार खुशियां लाये। इस अवसर पर आरड़ब्लुए के उपाध्यक्ष संजय बागड़ी, महासचिव राम महेश, कोषाध्यक्ष रविंद्र गुप्ता, अशोक यादव, सुमन खान, दिनेश मिश्रा, पंडित प्रमोद भारद्वाज, अमित कुमार, आजम खान, सुमित, अच्छेलाल गौतम, बाबी, भोले शंकर, भारत सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। भास्कर ने बताया कि इस दौरान अंतरराष्ट्रीय मिक्स मार्शल आर्ट प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल विजेता दुष्यंत सिंह को सम्मानित किया गया और सभी ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दी।

महिला दिवस के अवसर पर जीयो जागो फाउंडेशन द्वारा निशुल्क सेनेटरी पैड वितरण कार्यक्रम

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं के स्वास्थ्य और स्वच्छता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जीयो जागो फाउंडेशन ने शिव पार्क, अंबेडकर नगर में निःशुल्क सेनेटरी नैपकिन वितरण अभियान का आयोजन किया।इस पहल के तहत, फाउंडेशन ने जरूरतमंद महिलाओं और किशोरियों को सेनेटरी नैपकिन वितरित किए और मासिक धर्म स्वच्छता के महत्व पर जागरूकता फैलाई। कार्यक्रम में नारी शक्ति नमोस्तुते पहल के तहत महिलाओं को सशक्त बनाने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया गया।जीयो जागो फाउंडेशन की इस पहल का उद्देश्य महिलाओं को मासिक धर्म से जुड़ी झिझक और स्वास्थ्य समस्याओं से मुक्त कर, उन्हें जागरूक और आत्मनिर्भर बनाना है।फाउंडेशन के फाउंडर श्री धर्मवीर प्रभाकर ने समाज के सभी वर्गों से अपील की कि वे महिलाओं के स्वास्थ्य और स्वच्छता को प्राथमिकता दें और इस अभियान का हिस्सा बनें। जियो जागो फाउंडेशन हमेशा अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करती रही है। इसके तहत विभिन्न तरह के सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन कर कमजोर वर्ग की सहायता एवं उन्हें जागरूक बनाने का काम फाउंडेशन द्वारा किया जाता है।

पाटलिपुत्र सिग्नेचर पार्क का भव्य शुभारंभ, दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी ने भी बुक कराया अपना फ्लैट

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के प्रतिष्ठित क्षेत्र Chi V में आज पाटलिपुत्र सिग्नेचर पार्क का भव्य शुभारंभ हुआ। इस ऐतिहासिक अवसर पर दिल्ली के माननीय सांसद मनोज तिवारी ने परियोजना का उद्घाटन किया। मीडिया से बातचीत करते हुए उन्होंने खुलासा किया कि पटना में भी उन्होंने अपना घर अनिल कुमार पाटलिपुत्र ग्रुप बिल्डर से ही बनवाया है इसीलिए इस बिल्डर पर उन्हें पूरा विश्वास है यहां से नजदीक में ही मुख्यमंत्री योगी द्वारा फिल्म सिटी का निर्माण किया जा रहा है इसीलिए उन्होंने इस परियोजना में अपने लिए एक स्टूडियो अपार्टमेंट बुक कराया है।

इस कार्यक्रम में पाटलिपुत्र ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर अनिल कुमार सहित कई गणमान्य अतिथि, उत्साही ग्राहक और कंपनी के कर्मचारी उपस्थित रहे। अनिल कुमार ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा, रुपाटलिपुत्र ग्रुप ने देश के विभिन्न शहरों में 50 लाख स्क्वायर फीट से अधिक कमर्शियल और रेजिडेंशियल प्रोजेक्ट्स सफलतापूर्वक डिलीवर किए हैं। अब ग्रेटर नोएडा में इस नई परियोजना के माध्यम से हम अपने ग्राहकों को विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त एक अद्वितीय निवास प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हर प्रोजेक्ट की तरह, इस प्रोजेक्ट को भी समय पर और गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा किया जाएगा।ह

अनिल कुमार ने ग्राहकों के लिए विशेष ऑफर की घोषणा करते हुए बताया कि अभी सभी खरीदारों को 5 लाख रुपये तक का इनॉग्रल डिस्काउंट और 12% तक का अश्योर्ड रिटर्न पजेशन तक दिया जाएगा। कंपनी ने इस प्रोजेक्ट का पजेशन 2026 तक देने का संकल्प लिया है।

पाटलिपुत्र सिग्नेचर पार्क अपनी अत्याधुनिक सुविधाओं, प्राइम लोकेशन और बेहतरीन कनेक्टिविटी के कारण निवेशकों और होम बायर्स के लिए एक आकर्षक अवसर प्रस्तुत करता है। इस प्रोजेक्ट को लेकर ग्राहकों में भारी उत्साह देखने को मिला।

पाटलिपुत्र सिग्नेचर पार्क का शुभारंभ ग्रेटर नोएडा के रियल एस्टेट सेक्टर में एक नया मील का पत्थर साबित होगा। इस परियोजना के साथ पाटलिपुत्र ग्रुप ने एक बार फिर अपनी गुणवत्ता और विश्वसनीयता का परिचय दिया है।

गोबिन्द नगर में सीवर जाम को लेकर जलकल के खिलाफ हंगामा नारेबाजी

सुनील बाजपेई

कानपुर। नगर निगम शहर में साफ-सफाई के लंबे चौडे दावे के विपरीत गोबिन्द नगर क्षेत्र के ब्लाक-8 में सीवर लाइन चौक होने से नाराज लोगों ने जलकर के खिलाफ हंगामा करते हुए जमकर नारीबाजी भी की। लोगों का कहना है कि होली का त्यौहार ऐसी हालत में कैसे मना पाएंगे। लोगों ने रविवार को प्रदर्शन कर सीवर लाईन खोलने की मांग की।

भाजपा नेता प्रकाश वीर आर्य ने बताया कि गोबिन्द नगर ब्लाक-8 में इंटरलॉकिंग का काम हो रहा है। ठेकेदार ने पुरानी ईटे उखाड दी है।इधर पिछले कई दिनो से ठेकेदार व मजदूर आधा अधूरा काम बीच मे ही छोडकर गायब हो गए है। यहां ईटे उखडी होने से किसी तरह से लोग उक्त रास्ते से आ- जा रहे थे।परन्तु नंदलाल चौराहा से ब्लाक -8 जाने वाली उक्त गली मे एक सप्ताह से सीवर लाइन चौक होने से आवागमन पूरी तरह से ठप है। लोगों को काफी घूमकर आना जाना पड रहा है।मुख्यमंत्री पोर्टल के साथ साथ सामने स्थित जलकल आफिस में भी शिकायत की गई फिर भी समस्या का निस्तारण नही किया गया।

भाजपा नेता प्रकाश वीर आर्य ने कहा कि पिछले एक माह से लोग नारकीय जीवन जीने को मजबूर है।शिकायत के बावजूद सीवर लाइन खोलने कोई आ नहीं रहा। चेताया कि जल्द ही समस्या का निराकरण नही किया गया तो नागरिक नंदलाल चौराहा जाम करने को बाध्य होंगे।

धरना प्रदर्शन में प्रकाश वीर आर्य के अलावा सुनील दीक्षित, अंकुर खन्ना, शम्मी मल्होत्रा,रेखा खुशवानी, राहुल सिंह चौहान, सुरेश कुमार, शालू आर्य, गोरु मेहता, मंजू कठेरिया आदि रहे।

स्मार्टफोन से शुरू, जिंदगी पर खत्म: सट्टेबाजी की लत

[डिजिटल युग का काला साया : राष्ट्रीय आपदा बनता ऑनलाइन जुआ]

आज का युग तकनीक का युग है, जहाँ हर हाथ में स्मार्टफोन की चमक और हर नज़र के सामने डिजिटल दुनिया का सम्मोहन फैला है। यह चकाचौंध भरी दुनिया जितनी सुख-सुविधाओं का खज़ाना लेकर आई है, उतने ही गहन और खतरनाक अंधेरे भी साथ लाई है। इन अंधेरों में सबसे भयावह है ऑनलाइन सट्टेबाजी का वह जाल, जो भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था पर काले बादलों की तरह छाया हुआ है। तकनीक के अनियंत्रित विस्तार और डिजिटल प्लेटफॉर्मों की सहज उपलब्धता ने इस अवैध धंधे को चंद रातों में एक सुनियोजित और विशाल उद्योग में तब्दील कर दिया है। यह महज़ एक गैरकानूनी कारोबार नहीं, बल्कि एक ऐसी लाइलाज बीमारी है, जो हमारे सामाजिक ताने-बाने को चुपचाप खोखला कर रही है और आर्थिक स्थिरता को नेस्तनाबूद करने की कगार पर खड़ी है।

स्थिति की भयावहता का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि अक्टूबर से दिसंबर 2024 के महज़ तीन महीनों में परिमैच, स्टैक, 1एक्सबेट और बैटरी फर्स्ट जैसे ऑनलाइन सट्टेबाजी मंचों पर 1.60 अरब से ज़्यादा विजिट्स दर्ज की गईं। यह आँकड़ा उस विनाशकारी हकीकत का महज़ एक झरोखा है, जो इस उद्योग के राक्षसी आकार और प्रभाव को उजागर करता है। एक नीति समूह के हालिया आँकड़ों ने इस संकट की गहराई को और स्पष्ट किया है—अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी क्षेत्र में हर साल 100 अरब डॉलर (8.3 लाख करोड़ रुपये) से अधिक का लेन-देन हो रहा है, और यह हर साल 30% की चौंकाने वाली दर से बढ़ रहा है। यदि इस दानव को अभी नहीं कुचला गया, तो यह एक ऐसा नासूर बन जाएगा, जो हमारी सभ्यता की जड़ों को उखाड़ फेंकेगा और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को अंधेरे में धकेल देगा।

इस काले कारोबार की जड़ें गहरी और बहुआयामी हैं। सबसे पहला और प्रमुख स्रोत है खेल सट्टेबाजी, जो क्रिकेट, फुटबॉल और टेनिस जैसे लोकप्रिय खेलों पर आधारित है। भारत में क्रिकेट केवल एक खेल नहीं, बल्कि एक भावना है, और इसी भावना का शोषण यह उद्योग कर रहा है। खासकर आईपीएल जैसे टूर्नामेंट्स के दौरान यह कारोबार चरम पर पहुँच जाता है। देशभर में फैले हजारों बुकियों का संगठित तंत्र लोगों को झूठे मुनाफे का लालच देकर इस जाल में फँसाता है। एक बार इस दलदल में कदम पड़ जाए, तो निकलना असंभव-सा हो जाता है। दूसरा स्रोत है ऑनलाइन कैसीनो गेमिंग, जिसमें पोकर, ब्लैकजैक और रूले जैसे जुए के खेल शामिल हैं। ये खेल न केवल मनोरंजन के नाम पर लोगों को लुभाते हैं, बल्कि काले धन के प्रवाह को भी बढ़ावा देते हैं। यह एक ऐसा चक्रव्यूह है, जहाँ प्रवेश आसान है, पर बाहर निकलने का रास्ता कहीं दिखाई नहीं देता।

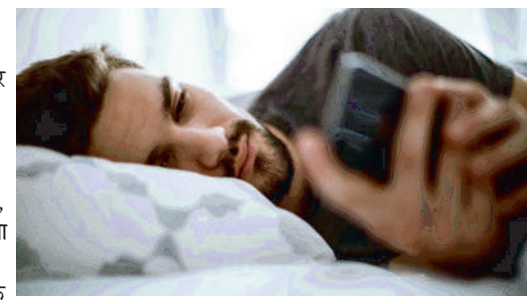

तीसरा महत्वपूर्ण आयाम है सोशल मीडिया और एनक्रिप्टेड मैसेजिंग ऐप्स का दुरुपयोग। व्हाट्सएप और टेलीग्राम जैसे मंचों पर सक्रिय हजारों सट्टेबाजी ग्रुप्स लोगों को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करते हैं। ये समूह विदेशी सर्वरों से संचालित होते हैं, जिसके चलते भारतीय कानून की पकड़ इन तक आसानी से नहीं पहुँच पाती। यहाँ तक कि साधारण नागरिक भी अनजाने में इन ग्रुप्स का हिस्सा बन जाते हैं और धीरे-धीरे इस व्यसन के शिकार हो जाते हैं। चौथा और सबसे चिंताजनक पहलू है प्रचार का वह भोंडा खेल, जिसमें बड़े-बड़े इन्फ्लुएंसर्स और सेलिब्रिटीज मोटी रकम के बदले इन अवैध प्लेटफार्मों का गुणगान करते हैं। इनकी लोकप्रियता और विश्वसनीयता का फायदा उठाकर युवा पीढ़ी को इस जाल की ओर धकेला जा रहा है। यह एक ऐसा षड्यंत्र है, जो समाज के भविष्य को ही दाँव पर लगा रहा है।

इस संकट से निपटने के लिए सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं, पर वे नाकाफी साबित हो रहे हैं। हाल ही में 658 विदेशी सट्टेबाजी वेबसाइटों को ब्लॉक करने का फैसला लिया गया, जो एक सकारात्मक पहल है। साथ ही, बैंकों को संदिग्ध लेन-देन की निगरानी के लिए निर्देश दिए गए हैं। लेकिन यह समस्या इतनी जटिल और व्यापक है कि केवल सतही उपायों से इसका समाधान संभव नहीं। जरूरत है एक ऐसे कठोर कानूनी ढाँचे की, जो इस उद्योग के हर पहलू को परिभाषित करे और इसके खिलाफ निर्णायक कार्रवाई सुनिश्चित करे। तकनीकी मंचों पर सख्त नियंत्रण, वित्तीय लेन-देन की पारदर्शिता और जन-जागरूकता अभियान इस संकट से उबरने के लिए अनिवार्य हैं। यह केवल कानून का मसला नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी का प्रश्न है।

ऑनलाइन सट्टेबाजी की लत एक ऐसी आग है, जो धीरे-धीरे व्यक्ति के जीवन को राख में बदल देती है। यह न केवल व्यक्तिगत स्तर पर परिवारों को बर्बाद कर रही है, बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी खोखला कर रही है। एक नीति समूह के अनुसार, यह अवैध उद्योग प्रतिवर्ष 8.3 लाख करोड़ रुपये से अधिक के लेन-देन को पार कर चुका है और 30% की दर से बढ़ रहा है। यह धन देश की प्रगति में योगदान देने के बजाय काले बाजार में समा रहा है। युवा वर्ग, जो देश का भविष्य है, इस लत के चंगुल में फँसकर अपनी ऊर्जा और संभावनाओं को नष्ट कर रहा है। यदि इसे अभी नहीं रोका गया, तो आने वाली पीढ़ियाँ इसकी कीमत चुकाएँगी।

इस मायाजाल से बाहर निकलने के लिए एक समग्र रणनीति की आवश्यकता है। सरकार को तकनीकी कंपनियों के साथ मिलकर ऐसे उपकरण विकसित करने चाहिए, जो इन प्लेटफार्मों की पहचान और निगरानी कर सकें। नागरिक समाज को जागरूकता फैलाने और लोगों को इस लत से बचाने के लिए आगे आना होगा। स्कूलों और कॉलेजों में इसके दुष्परिणामों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। साथ ही, उन प्रभावशाली हस्तियों पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए, जो अपने स्वार्थ के लिए इस आग में घी डाल रहे हैं। यह एक युद्ध है, जिसे जीतने के लिए हर स्तर पर संकल्प और संयम की जरूरत है।

अंत में, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि ऑनलाइन सट्टेबाजी का यह संकट एक राष्ट्रीय आपदा बन चुका है। यह वह आँधी है, जो हमारे समाज की जड़ों को उखाड़ने और अर्थव्यवस्था की नींव को ढहाने की ताकत रखती है। समय रहते यदि हम जागे नहीं, तो यह काला बादल हमें अंधेरे में डुबो देगा। यह केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हम सबकी सामूहिक जवाबदेही है कि हम इस मायाजाल को तोड़ें और अपने देश को इस दलदल से बाहर निकालें। आज का कदम ही तय करेगा कि कल का भारत समृद्ध होगा या इस संकट की भेंट चढ़ेगा। आइए, इस लड़ाई में एकजुट हों, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ स्वतंत्रता और सम्मान के साथ साँस ले सकें, न कि पछतावे और बर्बादी के बोझ तले दबकर।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

नंदगांव होली में भीड़ नियंत्रण में लगी सिविल डिफेंस मथुरा मथुरा: नंदगांव होली में भीड़ नियंत्रण एवं यातायात व्यवस्था में लगी सिविल डिफेंस मथुरा

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: नंदगांव होली में हर वर्ष की भांति इस बार भी जिला अधिकारी नियंत्रक नागरिक सुरक्षा मथुरा के आदेश अनुसार नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा के उप नियंत्रक सुमित मौर्य एवं चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी के नेतृत्व में नंदगांव में सिविल डिफेंस के 60 वार्डन एवं 20 आपदा मित्र नंदगांव होली में दूर दराज से आए आए श्रद्धालुओं की भीड़ को नियंत्रण करने में एवं यातायात व्यवस्था में पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर सेवा में जुटी रही बही जगह जगह पर राष्ट्रीय आपदा मोचन बल नागपुर एवं राज्य आपदा मोचन बल लखनऊ से प्रशिक्षण प्राप्त करके आए नागरिक सुरक्षा विभाग के पोस्ट वार्डन एवं आपदा मित्र अशोक यादव की क्विक रिस्पांस टीम ने मन्दिर परिसर एवं नंदगांव में जगह जगह अपनी आपदा किट एवं फर्स्टड किट के साथ सेवा में लगी रही । साथ ही सिविल डिफेंस मथुरा के पोस्ट वार्डन अशोक यादव, गिरीश कुमार, महेश चन्द,सैक्टर वार्डन सुनैना गुप्ता, जितेन्द्र कुमार धनगर, राजेश कुमार शिवहरे, पवन शर्मा, नरेन्द्र कुमार, पंकज, हेमलता, ज्योति, राजेश, मनोज,योगेश, अतुल, राकेश, जवर सिंह,आदि वार्डन स्वयंसेवक सेवाएं में लगी रही।

भारत सहित राष्ट्रमंडल के 56 देशों का वार्षिक उत्सव व अंतरराष्ट्रीय अद्भुतता दिवस का एक साथ आगाज़ 10 मार्च 2025

राष्ट्रमंडल दिवस पर धार्मिक नागरिक सभाएं स्कूल सभाएं वाद विवाद सांस्कृतिक समारोह तो वहीं अंतर्राष्ट्रीय अद्भुतता दिवसपर गुणों का विकास संदर्भित है-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर आदि अनादि काल से भारत की कहावतें मुहावरे संतों के वचन आध्यात्मिकता से निकली बातें चाहे वह हजारों वर्ष पूर्व भी कहीं गई कहीं या लिखी गई हो लेकिन वह आज भी सच साबित हो रही है क्योंकि पूर्व में भी उसका नतीजा सकारात्मक रहा है व भविष्य में भी यही सटीकता वाला क्रम चलता रहेगा यह कहावतें एक और एकग्यारह, एकता में बल, एक है तो नेक इत्यादि अनेक कहावतों का परिणाम हम यूरोपीय यूनियन 27 देश, अफ्रीकी संघ चौपन देश, इस्लामिक संघ 54 देश, राष्ट्रमंडल 56 देश इत्यादि हजारों समर्थ प्रमाण है तो वहीं राष्ट्रमंडल देशों के वार्षिक उत्सव 10 मार्च 2025 की थीम भी इन भारत मुहावरों से मिलती-जुलती है कि एक साथ हम आगे बढ़ते हैं। चूँकि राष्ट्रमंडल दिवस पर धार्मिक नागरिक सफाई, स्कूल सभाएं, वाद विवाद, सांस्कृतिक समारोह होते हैं तो वहीं अंतर्राष्ट्रीय अद्भुतता दिवस पर गुणों का विकास संदर्भित है इसलिए आज हम मीडियम उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे भारत सहित राष्ट्रमंडल के 56 देशों का वार्षिक उत्सव व अंतराष्ट्रीय अद्भुतता दिवस का एक साथ ! आगाज़ 10 मार्च 2025

साथियों बात अगर हम 10 मार्च 2025 मार्च के अंत तक चलने वाले 56 देशों के राष्ट्र मंडल दिवस की करें तो राष्ट्रमंडल दिवस राष्ट्रमंडल के 56 देशों का वार्षिक उत्सव है। राष्ट्रमंडल देश प्रशांत, अफ्रीका, एशिया, यूरोप, कैरिबियन और अमेरिका में पाए जाते हैं।राष्ट्रमंडल दिवस का विषय क्या है? हर साल राष्ट्रमंडल दिवस के लिए एक थीम चुनी जाती है। इस साल की थीम है 'एक साथ हम आगे बढ़ते हैं' ।राष्ट्रमंडल देशों में शामिल हैं:यूनाइटेड किंगडम कनाडा ऑस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड,पापुआ न्यू गिनी सिंगापुर मलेशिया भारत पाकिस्तान बांग्लादेश श्रीलंका साइप्रस माल्टा जमैका केन्या जाम्बिया घाना नाइजीरिया दक्षिण अफ्रीका और भी कई ! राष्ट्रमंडल के सदस्य देशों ने एक ताकत के रूप में भारत को मान्यता दी है। अफ्रीकी, कैरेबियन और दक्षिण प्रशांत के लगभग सभी राष्ट्रमंडल देशों ने भारत के साथ जिस प्रकार सहयोग बढ़ाया है, उससे अब बेहतर रूप से मान्यता मिली है। राष्ट्रमंडल देशों की कुल आबादी में लगभग 50 पर्सेंट और कुल जीडीपी में लगभग 30 पर्सेंट हिस्सेदारी भारत की है। राष्ट्रमंडल 56 स्वतंत्र देशों का एक स्वैच्छिक संघ है, जिनमें से लगभग सभी पहले ब्रिटिश शासन के अधीन थे। राष्ट्रमंडल की उत्पत्ति ब्रिटेन के भूतपूर्व साम्राज्य से हुई है। राष्ट्रमंडल के कई सदस्य ऐसे क्षेत्र थे जो ऐतिहासिक रूप से विभिन्न समयों पर बसावट, विजय या अधिग्रहण के माध्यम से ब्रिटिश शासन के अधीन आ गए थे ।राष्ट्रमंडल के बारे में तथ्यः (1) राष्ट्रमंडल में 2 अरब से अधिक लोग हैं ! (2) पृथ्वी पर हर तीन में से एक व्यक्ति राष्ट्रमंडल का हिस्सा है। (3) प्रशांत महासागर में स्थित नाउरू जैसे बहुत छोटे द्वीप भी राष्ट्रमंडल का हिस्सा हैं।(4) ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका राष्ट्रमंडल में ब्रिटेन के साथ शामिल होने वाले पहले देश थे।(5) स्वतंत्रता के लिए लंबे संघर्ष के बाद भारत 1947 में राष्ट्रमंडल में शामिल हुआ। (6) दक्षिण अफ्रीका 1961 में राष्ट्रमंडल से अलग हो गया और 1994 तक राष्ट्रमंडल में वापस नहीं लौटा। (7) 1990 में नामीबिया राष्ट्रमंडल में शामिल होने वाला पहला देश बना जो कभी ब्रिटेन द्वारा शासित नहीं था। (8) 2009 में राष्ट्रमंडल देशों ने राष्ट्रमंडल की 60वीं वर्षगांठ मनाई। राष्ट्रमंडल दिवस कैसे मनाया जाए? हमारे पास बहुत सारे उपयोगी संसाधन हैं जिनका उपयोग आप अपने छात्रों को राष्ट्रमंडल दिवस पढ़ाने और मनाने के लिए कर सकते हैं। हमारे पास वर्कशीट,गतिविधियाँ, पावरपॉइंट और बहुत कुछ है। (1) हम अपनी कक्षा को राष्ट्रमंडल के बारे में पढ़ाने के लिए हमारे राष्ट्रमंडल पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन से शुरुआत करना पसंद करेंगे। (2) हमारे पास एक उपयोगी राष्ट्रमंडल दिवस संसाधन पैक है, जिसमें वह सब कुछ शामिल है जो हमको अपने बच्चों को राष्ट्रमंडल के बारे में सिखाने के लिए चाहिए। इसमें रंग भरने वाली शीट, पावरपॉइंट, शब्द खोज, तथ्य पत्रक, प्रदर्शन पोस्टर और बहुत कुछ शामिल है ! (3) यदि हम अपने विद्यार्थियों को राष्ट्रमंडल के अनेक देशों के बारे में सब कुछ सिखाना चाहते हैं, तो यह राष्ट्रमंडल स्थानिक ज्ञान मानचित्र गतिविधि बहुत अच्छी होगी ! (4) यदि हम असेंबली पावरपॉइंट की तलाश में हैं, तो और कहीं न जाएँ ! हमारे पास यहाँ एक सुंदर राष्ट्रमंडल दिवस असेंबली पावरपॉइंट है ! (5) क्यों न हम भी इस राष्ट्रमंडल खेल सूचना पावरपॉइंट पर एक नजर डालें ! और, हमारे निःशुल्क संसाधन कॉमनवेल्थ फ्लैग्स बिंगो को देखें - जो आपकी कक्षा के साथ करने के लिए एक उत्कृष्ट और मजेदार गतिविधि है। (6) इन राष्ट्रमंडल खेलों के डॉट-टू-डॉट गतिविधि शीट्स पर एक नज़र जरूर डालें।

साथियों बात अगर हम 10 मार्च 2025 को मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय अद्भुतता दिवस को समझने की करें तो, हर साल 10 मार्च को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय अद्भुतता दिवस एक ऐसा दिन है, जिस दिन कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, अपनी अद्भुतता का जश्न मना सकता है। हाँ, हम सभी में ऐसे गुण होते हैं जो हमें किसी न किसी तरह से अद्भुत बनाते हैं। इसलिए आज, अपनी सभी असुरक्षाओं को दूर करें और खुद को वह प्रशंसा देने के लिए तैयार हो जाएँ जिसके आप हकदार हैं। निश्चित रूप से कोई भी व्यक्ति परिपूर्ण नहीं होता। दूसरी ओर, हर कोई अपने तरीके से अद्भुत होता है। हमको बस अपने किसी गुण को उजागर करना है और उस पर ध्यान केंद्रित करना है जो उसे इतना खास बनाता है। इस दिन का उपयोग दूसरों को यह बताकर खुशी साझा करने के लिए करें कि वे कितने अद्भुत हैं अंतर्राष्ट्रीय अद्भुतता दिवस का इतिहास- अद्भुतता' शब्द के कई सकारात्मक अर्थ हैं। उदाहरण के लिए,यह किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में उल्लेखनीय गुण को संदर्भित कर सकता है। साथ ही, यह एक ऐसे गुण को दर्शाता है जो दूसरों में विस्मय पैदा करता है। नतीजतन, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आजकल इस शब्द का अत्यधिक उपयोग किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय अद्भुतता दिवस एक मजेदार कार्यक्रम है जो सकारात्मकता फैलाने में कामयाब होता है क्योंकि यह वर्ष के ऐसे समय में आयोजित किया जाता है जब अद्भुत लोगों का जश्न मनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। हम सोच रहे होंगे कि कोई व्यक्ति अद्भुत कैसे बन जाता है। खैर, एक अद्भुत व्यक्ति वह होता है जो प्रभावशाली, भयानक या प्रेरक होता है। यह कहानी है कि यह दिन कैसे शुरू हुआ? अंतर्राष्ट्रीय अद्भुतता दिवस पहली बार 2008 में केविन लॉवर द्वारा मनाया गया था, जो इस दिन के निर्माता हैं। लॉवर को इस उत्सव का विचार फ्रेडी मानेरो नामक एक प्रशिक्षु के साथ काम करते समय आया था। प्रशिक्षु ने सुझाव दिया था कि लॉवर की अद्भुतता का जश्न मनाया जाना चाहिए,इसलिए इस दिन की घोषणा ट्विटर पर की गई। तब से, इस प्रवृत्ति ने गति पकड़ी है और अब इसे वैश्विक स्तर पर मनाया जाता है। इसके अलावा, डैन लूरी ने आकर्षक टैगलाइन के साथ आकर इस अवधारणा को और निखारा, क्योंकि हर किसी को शानदार होने का बहाना चाहिए। बाद में, लॉवर की बेटी ने भी एक प्रेरणादायक नई टैगलाइन बनाई, कोई भी परिपूर्ण नहीं है, लेकिन हर कोई शानदार हो सकता है। यह तिथि इसलिए भी चुनी गई क्योंकि यह चक नोरिस के जन्मदिन पर पड़ती है - एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी शानदारता के लिए प्रसिद्ध है ! इसलिए, चाहे हम कोई भी हों या हम क्या करते हों, इस दिन का उपयोग सिर्फ़ मौजूद रहने और शानदार होने के लिए खुद की पीठ थपथपाने के लिए करें ! अंतर्राष्ट्रीय अद्भुतता दिवस की गतिविधियाँ (1) कुछ अद्भुत करो- कुछ ऐसा करें जो आपको लगता है कि इस दिन को वास्तव में मनाने के लिए बहुत बढ़िया है। यह खाना पकाने से लेकर यात्रा करने या बंजी जंपिंग तक कुछ भी हो सकता है। इस दिन के बारे में जागरूकता फैलाएँ (2) इस दिन के बारे में जागरूकता फैलाएं और लोगों को खुश करने के लिए अपनी उत्कृष्टता का जश्न मनाने के संदेश को फैलाएं। (3) साहसी बनें- इस दिन निडर और शानदार बनें, और कुछ ऐसा करें जिससे हम हमेशा डरते रहे हैं। एड्रेनालाईन का जो उछाल आप अनुभव करेंगे, वह हमको कई दिनों तक उत्साहित रखेगा। हम अंतर्राष्ट्रीय अद्भुतता दिवस को क्यों पसंद करते हैं? (1) इससे हमको अच्छा महसूस होता है- यह दिन लोगों को उनके विभिन्न अद्भुत गुणों की याद दिलाने तथा उन्हें स्वयं पर विश्वास क्यों करना चाहिए, यह बताने के लिए समर्पित है। (2) यह हमको लक्ष्य पूरा करने में मदद करता है-यह दिन उन लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता करने के लिए प्रेरक का काम करता है, जिन्हें उन्होंने वर्षों से लंबित रखा है। (3) यह आत्मविश्वास बढ़ाने वाला है- चूंकि यह दिन सभी को यह याद दिलाता है कि वे कितने शानदार हैं, इसलिए यह सभी का आत्मविश्वास बढ़ाने में भी सहायक होता है।

अतः अगर हम अपने पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे किभारत सहित राष्ट्रमंडल के 56 देशों का वार्षिक उत्सव व अंतरराष्ट्रीय अद्भुततादिवस का एक साथ आगाज़ 10 मार्च 2025 राष्ट्रमंडल दिवस 2025 की थीम एक साथ हम आगे बढ़ते हैं का जबरदस्त आगाज़ ।राष्ट्रमंडल दिवस पर धार्मिक नागरिक सभाएं स्कूल सभाएं वाद विवाद सांस्कृतिक समारोह तो वहीं अंतर्राष्ट्रीय अद्भुतता दिवसपर गुणों का विकास संदर्भित है।

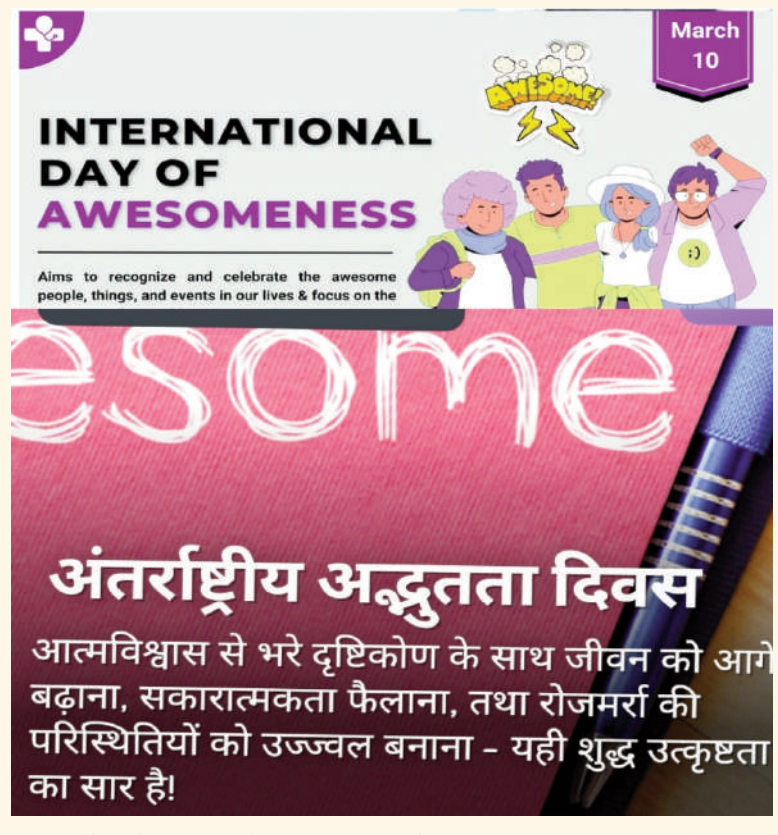

महंगा हो गया निसान की सब फोर मीटर एसयूवी मैग्नाइट को खरीदना, जानें कितनी बढ़ गई कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी वाहन निर्माता Nissan की ओर से भारतीय बाजार में दो एसयूवी की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Nissan Magnite को खरीदना अब महंगा हो गया है। कंपनी की ओर से इसकी कीमतों में कितने रुपये तक की बढ़ोतरी की है। अब किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जापानी की वाहन निर्माता Nissan की ओर से एंट्री लेवल एसयूवी सेगमेंट में Magnite की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से इस एसयूवी की कीमतों को बढ़ा दिया है। अब इस एसयूवी को खरीदना कितना महंगा (Nissan Magnite Price) हो गया है। किस कीमत पर अब इसे बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Nissan Magnite को खरीदना हुआ महंगा

निसान की ओर से ऑफर की जाने वाली एसयूवी मैग्नाइट को खरीदना अब महंगा हो गया है। कंपनी की ओर से इस एसयूवी की कीमतों को फरवरी 2025 में बढ़ा दिया है। एसयूवी की कीमत में अब चार हजार रुपये बढ़ाए (Nissan Car Price Update) गए हैं। खास बात यह है कि इसके फेसलिफ्ट वर्जन को चार अक्टूबर 2024 को ही भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया था।

दो बार हुई महंगी

निसान की ओर से इस एसयूवी की कीमतों में दो महीने में दूसरी बार बढ़ोतरी की गई है। इसके पहले जनवरी 2025 में इसकी कीमतों में बढ़ोतरी की गई थी।

कैसे हैं फीचर्स

निसान मैग्नाइट एसयूवी में कंपनी की ओर से कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी डीआरएल, रूफ रेल, पुश बटन स्टार्ट, ऑटो डिमिंग रियर व्यू मिरर, ब्लैक और ब्राउन इंटीरियर, साफ्ट टच, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, वायरलेस चार्जर, फ्रंट आर्म रेस्ट, यूएसबी चार्जिंग पोर्ट जैसे कई फीचर्स इसमें मिलते हैं।

कितना दमदार इंजन

कंपनी की ओर से इसमें एक लीटर नेचुरल एस्पिरेटिड इंजन को दिया जाता है। जिसके साथ 5स्पीड मैनुअल और 5एएमटी का ट्रांसमिशन मिलता है। इसके अलावा इसमें एक लीटर की क्षमता का ही टर्बो पेट्रोल इंजन भी मिलता है जिसमें सीवीटी ट्रांसमिशन को दिया जाता है। इसके नेचुरल एस्पिरेटिड इंजन से 72 पीएस की पावर और 96 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। वहीं इसके टर्बो इंजन से एसयूवी को 100 पीएस की पावर और 152 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

कितनी हुई कीमत

Nissan Magnite की कीमतों में बढ़ोतरी के बाद अब इसकी एक्स शोरूम कीमत 6.14 लाख रुपये से शुरू हो रही है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 11.92 लाख रुपये है।

किनसे है मुकाबला

निसान की ओर से मैग्नाइट को सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Brezza, Kia Sonet, Kia Syros, Hyundai Venue, Tata Nexon, Renault Kiger जैसी एसयूवी के साथ होता है।

रिनॉल्ट कर रही है इस एसयूवी के फेसलिफ्ट को लाने की तैयारी, टेस्टिंग के दौरान मिली यह जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की वाहन निर्माता रेनो की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से जल्द ही अपनी एसयूवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली Renault Kiger के Facelift को लाने की तैयारी की जा रही है। टेस्टिंग के दौरान एसयूवी को लेकर क्या जानकारी मिली है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में रेनो की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में Renault Kiger की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की योजना जल्द ही इस एसयूवी के फेसलिफ्ट को बाजार में लॉन्च करने की है। टेस्टिंग के दौरान इसकी क्या जानकारी सामने आई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

जल्द लॉन्च होगा Renault Kiger का फेसलिफ्ट

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फ्रांस की निर्माता रेनो की ओर से ऑफर की जाने वाली एसयूवी काइगर के फेसलिफ्ट (Renault SUV Facelift) को जल्द ही भारतीय बाजार में औपचारिक तौर पर लॉन्च किया जा सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक लॉन्च से पहले इसकी टेस्टिंग की जा रही है, जिस दौरान एसयूवी को देखा गया है।

क्या मिली जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो काइगर के फेसलिफ्ट को टेसटिंग के दौरान देखा गया है, जिससे उसके एक्सटीरियर की जानकारी सामने आई है। एसयूवी के एक्सटीरियर में कई कॉस्मैटिक बदलावों को किया जा सकता है, जिससे गाड़ी को नयापन मिलेगा। इसमें गाड़ी के बंपर और लाइट्स में बदलाव किया जाएगा। हालांकि मौजूदा वर्जन की तरह ही इसमें रूफ रेल भी दी जाएंगी। वहीं केबिन में भी कुछ बदलाव किए जा सकते हैं और कुछ नए फीचर्स को इसमें जोड़ा जा सकता है।

क्या इंजन में होगा बदलाव?

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक भले ही एसयूवी के फेसलिफ्ट वर्जन को लॉन्च किया जाएगा। लेकिन इसके इंजन में किसी भी तरह के बदलाव की उम्मीद नहीं है। कंपनी की ओर से मौजूदा एक लीटर की क्षमता के नेचुरल एस्पिरेटिड इंजन के साथ मैनुअल ट्रांसमिशन और एक लीटर के टर्बो पेट्रोल इंजन के साथ एएमटी ट्रांसमिशन को ही दिया जाएगा।

कब होगी लॉन्च

कंपनी की ओर से औपचारिक तौर पर फिलहाल इसकी जानकारी नहीं दी गई है लेकिन उम्मीद की जा रही है कि एसयूवी के फेसलिफ्ट वर्जन को भारतीय बाजार में इस साल के आखिर या अगले साल के शुरू में लॉन्च किया जाएगा। हाल में ही इस एसयूवी को सीएनजी के विकल्प के साथ भी ऑफर किया गया है।

किनसे है मुकाबला

भारतीय बाजार में रेनो की ओर से काइगर एसयूवी को सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला निसान मैग्नाइट, टाटा पंच, टाटा नेक्सन, मारुति ब्रेजा, हुंडई वेन्यू, किआ सोनेट, किआ सिरोस, महिंद्रा XUV 3XO, स्कोडा काइलैक जैसी एसयूवी के साथ होता है।

टोयोटा इनोवा क्रिस्टा के बेस वेरिएंट को ले आएं घर, पांच लाख रुपये की डॉउन पेमेंट के बाद जाएगी कितनी EMI,

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में Toyota की ओर से एमपीवी के तौर पर Toyota Innova Crysta को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इसके बेस वेरिएंट 2.4 GX 6str को खरीदने का मन बना रहे हैं तो इसके लिए पांच लाख रुपये की Down Payment देने के बाद कितने रुपये महीने की EMI देनी (Toyota Innova Crysta 2.4 GX 7str Down Payment and EMI) होगी। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में Toyota की ओर से एमपीवी सेगमेंट में Toyota Innova Crysta को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी को सिर्फ डीजल इंजन के विकल्प के साथ ही लाया जाता है। अगर आप इसको डीजल इंजन के साथ बेस वेरिएंट 2.4 GX 7 Str के साथ खरीदने का मन बना रहे हैं, तो पांच लाख रुपये की Down Payment देने के बाद कितने रुपये की EMI पर घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Toyota Innova Crysta 2.4 GX 7 Str Price

Toyota की ओर से Innova Crysta के बेस वेरिएंट के तौर पर 2.4 GX 7 Str को ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी के बेस वेरिएंट की एक्स शोरूम (Toyota Innova Crysta 2.4 GX 7 Str Price) कीमत 19.99 लाख रुपये है। इस गाड़ी को अगर दिल्ली में खरीदा जाता है तो करीब 2.50 लाख रुपये आरटीओ और करीब 1.06 लाख रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। जिसके बाद Toyota Innova Crysta 2.4 GX 7 Str on road price करीब 23.75 लाख रुपये के आस-पास हो जाती है।

पांच लाख Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर आप इस गाड़ी के बेस वेरिएंट 2.4 GX 7 Str को खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में पांच लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 18.75 लाख रुपये को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको 9 फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 18.75 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने 30170 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप 9 फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 18.75 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 30170 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Toyota Innova Crysta 2.4 GX 7 Str के लिए करीब 6.59 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 30.34 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Toyota की ओर से Innova Crysta को कंपनी की ओर से एमपीवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Maruti Ertiga, Kia Carens जैसी बजट एमपीवी कारों के साथ होता है।

पेट्रोल या डीजल: कौन सी कार आपके लिए होगी बेस्ट?

परिवहन विशेष न्यूज

पेट्रोल और डीजल कारों के बीच चयन करते समय दोनों के फायदे और नुकसान समझना महत्वपूर्ण है। पेट्रोल कारें शहरी क्षेत्रों के लिए आदर्श हैं क्योंकि ये कम प्रदूषण फैलाती हैं और रख-रखाव सस्ता होता है। वहीं डीजल कारें लंबी दूरी की यात्रा और ज्यादा ईंधन दक्षता के लिए बेहतर हैं लेकिन इनका रख-रखाव महंगा होता है। आपकी यात्रा की आदतें और बजट इस चयन को प्रभावित करते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कार खरीदने के दौरान पेट्रोल और डीजल इंजन वाली कारों के बीच चुनाव करना एक सामान्य और अहम निर्णय होता है। दोनों के अपने-अपने फायदे और नुकसान होते हैं, और आपके निर्णय पर विभिन्न कारक प्रभाव डाल सकते हैं जैसे ड्राइविंग की आदतें, बजट, ईंधन लागत, और पर्यावरण पर प्रभाव। इस आर्टिकल में हम पेट्रोल और डीजल कारों के बीच मुख्य अंतर और उनके फायदे-नुकसान पर चर्चा करेंगे, ताकि आप बेहतर चुनाव कर सकें।

1. इंजन पावर

Petrol Car: पेट्रोल इंजन की पावर कम होती है, जिससे ये शहरों में ड्राइविंग के लिए ज्यादा आरामदायक होती हैं।

Diesel Car: डीजल इंजन अधिक पावर और टॉर्क प्रदान करता है, जिससे यह लंबी दूरी की ड्राइविंग और भारी लोड में बेहतर प्रदर्शन करती है।

2. ईंधन की लागत और माइलेज

Petrol Car: पेट्रोल की कीमत डीजल से थोड़ी ज्यादा होती है और इनका माइलेज भी कम होता है।

Diesel Car: डीजल की कीमत पेट्रोल से कम होती है और डीजल इंजन अधिक ईंधन दक्ष (फ्यूल-इफिशियेंट) होते हैं, जिससे लंबी यात्रा में अधिक माइलेज मिलता है।

3. पर्यावरणीय प्रभाव

Petrol Car: पेट्रोल इंजन कम प्रदूषण पैदा करते हैं, क्योंकि इनमें नाइट्रोजन ऑक्साइड और पार्टिकुलेट मैटर कम उत्सर्जित होते हैं।

Diesel Car: डीजल इंजन अधिक प्रदूषण उत्पन्न करते हैं, खासकर नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx) और पार्टिकुलेट मैटर (PM) के रूप में, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

4. रख-रखाव और मरम्मत

Petrol Car: पेट्रोल इंजन का रख-रखाव सस्ता और सरल होता है, जिससे इसे बनाए रखना आसान होता है।

Diesel Car: डीजल इंजन का रख-रखाव महंगा होता है और इसकी मरम्मत में अधिक खर्च आ सकता है, लेकिन इसकी जीवनकाल लंबी होती है।

5. कीमत और बजट

Petrol Car: पेट्रोल कारों की कीमत डीजल कारों से सस्ती होती है और इनका रख-रखाव भी कम खर्चीला होता है।

Diesel Car: डीजल कारों की कीमत थोड़ी अधिक होती है, लेकिन यदि आप लंबी दूरी तय करते हैं तो ये आर्थिक रूप से अधिक किफायती हो सकती हैं।

एक्सपर्ट एडवाइस

कुल मिलाकर, पेट्रोल और डीजल कारों के बीच का चुनाव आपकी ड्राइविंग आदतों, बजट और ईंधन खर्च पर निर्भर करता है। यदि आप शहरी इलाके में छोटी दूरी के लिए कार चला रहे हैं, तो पेट्रोल कार एक अच्छा विकल्प हो सकती है। दूसरी ओर, अगर आप लंबी दूरी के लिए ड्राइव करते हैं या ट्रिप्स पर जाते हैं, तो डीजल कार ज्यादा किफायती हो सकती है। इसके अलावा, यदि आपको पर्यावरण की चिंता है, तो पेट्रोल कार आपके लिए बेहतर हो सकती है। दोनों के फायदे और नुकसान हैं, इसलिए अपनी आवश्यकताओं के आधार पर सही चुनाव करें।

वन उपज से दीर्घकालीन रोजगार का लक्ष्य

विजय गर्ग

घूमर महिला प्रोड्यूसर कंपनी में लगभग 2000 महिला शेयर होल्डर हैं, जिनमें से अधिकांश गरासिया आदिवासी महिलाएं हैं। इस कंपनी के लगभग सभी उत्पाद इन महिलाओं और उनके परिवारों की आजीविका को सशक्त करने के साथ स्वास्थ्य को बेहतर करने वाले उत्पादों से जुड़े हैं। सीताफल या कस्टर्ड एप्पल के गूदे को निकाल कर विभिन्न खाद्य औद्योगिक इकाइयों को बेचा जाता है...

समावेशी विकास के लिए आदिवासी समुदायों की प्रगति को टिकाऊ आधार देना बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। इसके लिए लघु वन उपज आधारित आजीविकाओं का विशेष महत्व है क्योंकि वन बहुत नजदीकी तौर पर आदिवासी जन-जीवन से जुड़े हैं। यदि विविध तरह की लघु वन उपज का उपयोग वन-रक्षा के लिए जरूरी सावधानियों के अनुकूल हो, तो इससे टिकाऊ तौर पर आजीविका आधार बढ़ाने और बेहतर करने के अनेक अवसर उपलब्ध हो सकते हैं।

इन संभावनाओं को अधिकांश स्थानों पर अभी प्राप्त नहीं किया जा सका है क्योंकि चाहे लघु वन उपज एकत्र करने में आदिवासी कितनी भी मेहनत करें, पर उन्हें इस एकत्रित लघु वन उपज की उचित कीमत नहीं मिल पाती है। जब काफी मेहनत से एकत्रित उपज को व्यापारियों को बहुत सस्ती कीमत पर बेचना पड़ता है, तो प्रायः आदिवासी ठगे से महसूस करते हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए जहां उचित कीमत उपलब्ध करवाना जरूरी है। यह भी आवश्यक है कि इन उत्पादों के स्थानीय प्रसंस्करण द्वारा उनकी मूल्य वृद्धि की जाए और इस तरह बेहतर कीमत प्राप्त करने के साथ-साथ स्थानीय रोजगार सृजन में भी वृद्धि की जाए।

कुछ ऐसा ही प्रयास हो रहा है आदिवासी महिलाओं की प्रोड्यूसर कंपनी घूमर द्वारा, जो राजस्थान के पाली और उदयपुर जिलों में सक्रिय हैं। ग्रामीण महिलाओं की सदस्यता के आधार पर चल रही इस प्रोड्यूसर कंपनी ने सैकड़ों महिलाओं और उनके परिवारों की लघु वन उपज से प्राप्त आय में मात्र पांच-छह वर्षों में उल्लेखनीय वृद्धि की है। धर्मी बाई की ही बात करें तो जहां पहले वह एक वर्ष में लघु वन उपज से 6 हजार रुपये के आसपास ही प्राप्त कर सकती थीं, वहां अब उनके परिवार ने एक वर्ष में 79,450 रुपये की आय लघु वन उपज से प्राप्त की। इन गांवों में ऐसी सैकड़ों महिलाएं मिल जाएंगी, जो 50,000 रुपये के आसपास एक वर्ष या सीजन में लघु वन-उपज से प्राप्त कर रही हैं।

घूमर महिला प्रोड्यूसर कंपनी में लगभग 2000 महिला शेयर होल्डर हैं, जिनमें से अधिकांश गरासिया आदिवासी महिलाएं हैं। इस कंपनी के लगभग सभी उत्पाद इन महिलाओं और उनके परिवारों की आजीविका को सशक्त करने के साथ स्वास्थ्य को बेहतर करने वाले उत्पादों से जुड़े हैं। सीताफल या कस्टर्ड एप्पल के गूदे को निकाल कर विभिन्न खाद्य औद्योगिक इकाइयों को बेचा जाता है, जबकि इसके बीज और छिलके का भी उचित उपयोग होता है। जामुन के स्लाइस और पेय तैयार होते हैं। पलाश के फूल का गुलाल बनता है और अन्य वनस्पतियों आधारित सूखे रंग भी बनते हैं। पलाश की पत्तियों के दोने-पत्तल बनते हैं। बेर छांट कर बेचे जाते हैं और इसके चूर्ण और पेस्ट से अन्य उत्पाद भी बनते हैं, जैसे लड्डू और लालीपॉप जैसा खाद्य।

घूमर महिला प्रोड्यूसर कंपनी ने इन विभिन्न उत्पादों के लिए आधुनिक उत्पादन विधियां विकसित की हैं और इसके लिए जरूरी मशीनें और उपकरण खरीदे हैं, पर साथ ही ऐसी तकनीक अपनाई है जो अधिकांश यंत्र आधारित न हो और जिसमें आदिवासी ग्रामीण महिलाओं को पर्याप्त रोजगार मिलता रहे। इन विभिन्न उत्पादों की बिक्री बढ़ाने के प्रयास तेज हो रहे हैं, पर इन ग्रामीण महिलाओं के लिए केवल आय बढ़ाना ही सब कुछ नहीं है, वे इस ओर भी ध्यान देती हैं कि वनों की रक्षा करते हुए ही उपज प्राप्त की जाए ताकि वन आधारित आजीविका टिकाऊ आधार पर सुरक्षित रहे।

दूसरी ओर कुछ बाहरी एजेंट इस तरह वनों का दोहन करने का प्रयास करते हैं, जिससे कच्चे फल भी तोड़े जाते हैं और पेड़ों से सीताफल जैसे फल कम प्राप्त होते हैं। फल प्राप्त करने का सीजन छोटा हो जाता है, फल एकत्रित करने वालों की आय कम होती है और कच्चे ही तोड़ लिए गए फल एक तरह से नष्ट ही होते हैं क्योंकि उनका कोई विशेष उपयोग नहीं हो पाता है।

दूसरी ओर घूमर महिला प्रोड्यूसर कंपनी से जुड़ी महिलाओं को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि विभिन्न सावधानियों को अपनाते हुए ही फल, फूल, पत्ती आदि को प्राप्त किया जाए। साथ ही स्थानीय परिवेश से जुड़े होने के कारण उन्हें स्वाभाविक तौर पर भी इस विषय का बेहतर पारंपरिक ज्ञान होता है कि क्या तोड़ना है और क्या नहीं तथा कैसी सावधानी बरतना जरूरी है।

कंपनी के नेतृत्व का प्रयास है कि इसके उत्पादन और आय को बढ़ाकर इसे कहीं अधिक महिलाओं तक पहुंचाया जाए और उन्हें अधिक आय भी उपलब्ध कराई जाए। इसे संबंधित अधिकारियों से भी सहयोग मिल रहा है। एक बड़ा सवाल यह है कि क्या इसके उत्पाद स्वयं भी एक लोकप्रिय ब्रांड के रूप में सीधे-सीधे उपभोक्ताओं में अधिक व्यापक स्थान प्राप्त कर सकेंगे। यदि ऐसा संभव हुआ तो यह वन-उपज आधारित आदिवासियों की टिकाऊ आजीविका को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

यूक्रेन के लिए अमेरिकी समर्थन का भविष्य?

यूक्रेन के लिए अमेरिकी समर्थन का दृष्टिकोण वर्तमान में अस्पष्ट है, जो राजनीतिक कारकों, सैन्य आवश्यकताओं और वैश्विक सम्बंधों द्वारा आकार लेता है। यूक्रेन को अमेरिकी सहायता का स्तर राजनीतिक परिदृश्य, यूक्रेन में चल रही सैन्य स्थिति और अंतर्राष्ट्रीय सहयोगियों के साथ सहयोग पर निर्भर करेगा। जैसे-जैसे अमेरिका और दुनिया भर में परिस्थितियाँ बदलती हैं, यूक्रेन के लिए समर्थन का प्रकार और मात्रा भी बदलती रहेगी।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के नेतृत्व में यूक्रेन के लिए अमेरिकी समर्थन में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिले हैं। हाल ही में, यूक्रेन के साथ सैन्य सहायता और खुफिया जानकारी साझा करना रोक दिया गया है, क्योंकि अमेरिका कीव को रूस के साथ शांति वार्ता में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता है। इस बदलाव ने यूक्रेन की रक्षा क्षमताओं के बारे में चिंताएँ पैदा कर दी हैं, विशेष रूप से यू.एस. निर्मित पैट्रियट मिसाइल प्रणालियों की उपलब्धता के बारे में, जो कीव जैसे शहरों को रूसी हमलों से बचाने के लिए महत्त्वपूर्ण रही हैं। यूरोपीय सहयोगियों के पास इन प्रणालियों का कोई प्रत्यक्ष विकल्प नहीं है, जिससे यूक्रेन जोखिम में पड़ सकता है। इस बीच, राष्ट्रपति ट्रम्प रूस पर नए प्रतिबंधों और टैरिफ़ पर विचार कर रहे हैं ताकि मास्को को शत्रुता समाप्त करने के लिए मजबूर किया जा सके। यह रणनीति प्रत्यक्ष सैन्य समर्थन से आर्थिक रणनीति में परिवर्तन को चिह्नित करती है। इन परिवर्तनों ने यू.एस.-यूक्रेन सम्बंधों पर दबाव डाला है और यूरोपीय सहयोगियों के साथ तनाव पैदा किया है, जो यूक्रेन का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और उन्होंने पर्याप्त सैन्य ख़र्च पहल की घोषणा की है।

अलग-अलग दृष्टिकोणों ने यूक्रेन की स्थिति के बारे में यू.एस और यूरोप के बीच बढ़ते विभाजन को जन्म दिया है। कुल मिलाकर, यूक्रेन के लिए यू.एस. समर्थन का भविष्य प्रत्यक्ष सैन्य सहायता से हटकर आर्थिक और कूटनीतिक रणनीतियों की ओर बढ़ रहा है, जो वर्तमान में विदेश नीति के व्यापक पुनर्मूल्यांकन का संकेत देता है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने फरवरी 2022 में रूस द्वारा पूर्ण रूप से आक्रमण शुरू करने के बाद से यूक्रेन को सैन्य और वित्तीय सहायता के साथ महत्त्वपूर्ण रूप से सहायता की है। विभिन्न सहायता पैकेजों के माध्यम से अधिकृत कुल निधि लगभग 175 बिलियन डॉलर तक पहुँच गई है, जिसमें सैन्य सहायता के लिए काफ़ी राशि आवंटित की गई है। हालांकि, हाल के बदलावों से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के तहत अमेरिकी नीति में संभावित बदलाव का संकेत मिलता है, जिन्होंने रूस के साथ शांति वार्ता को प्रोत्साहित करने के प्रयास में यूक्रेन के साथ सभी सैन्य सहायता और खुफिया जानकारी साझा करना बंद कर दिया है। यूक्रेन की सैन्य स्थिति नाज़ुक बनी हुई है। चल रही सैन्य सहायता महत्त्वपूर्ण है; विश्लेषकों ने चेतावनी दी है कि इसके बिना, यूक्रेन को युद्ध के मैदान में बड़ा नुक़सान हो सकता है।

अमेरिका उन्नत हथियारों और खुफिया जानकारी का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत रहा है जिसने यूक्रेन की रक्षा क्षमताओं को मज़बूत किया है। यदि अमेरिकी सहायता कम हो जाती है या पूरी तरह से बंद हो जाती है, तो विशेषज्ञों का मानना है कि इससे रूस की बड़ी ताकतों के खिलाफ अपनी रक्षा बनाए रखने की यूक्रेन की क्षमता में गंभीर बाधा आएगी। दूसरी ओर, यदि सहायता वर्तमान या बढ़े हुए स्तरों पर जारी रहती है, तो यह समय के साथ यूक्रेन की क्षमताओं को महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकती है।

2022 में रूस के आक्रमण के बाद से भू-राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करने में अमेरिका और यूक्रेन के बीच सम्बंध महत्त्वपूर्ण रहे हैं। 2024 तक, अमेरिका ने यूक्रेन को 119 बिलियन डॉलर से अधिक की सहायता प्रदान की थी, लेकिन हाल के राजनीतिक परिवर्तनों और बजट सीमाओं ने इस सहायता के भविष्य पर संदेह पैदा कर दिया है। इस अनिश्चितता का यूक्रेन की रक्षा क्षमताओं और समग्र क्षेत्रीय स्थिरता पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। अमेरिका और यूक्रेन के नेताओं के बीच हाल ही में हुए आदान-प्रदान के दौरान तनाव को उजागर किया गया, जिससे अमेरिकी सैन्य और राजनयिक समर्थन की निरंतरता के बारे में चिंताएँ बढ़ गईं।

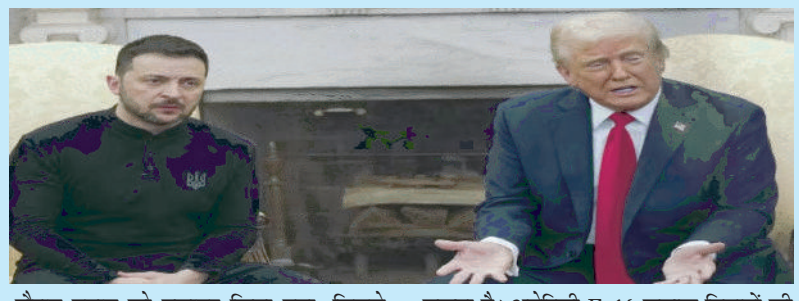

नियोजित राजनयिक दोपहर के भोजन को अचानक रद्द करना सद्भावना की कमी का संकेत देता है, जिससे कीव और यूरोपीय नेताओं में चिंता पैदा हो गई है। इसके अतिरिक्त, कई रिपब्लिकन राजनेताओं ने अमेरिकी सरकार की वर्तमान स्थिति का समर्थन किया है। अमेरिकी सैन्य सहायता में कमी रूस को यूक्रेन में अपनी कार्रवाइयों को तेज करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है, जिसके परिणामस्वरूप सत्ता शून्यता का लाभ उठाया जा सकता है। 2014 में क्रीमिया पर कब्ज़ा करने जैसे अमेरिकी निष्क्रियता के ऐतिहासिक उदाहरणों ने पुतिन को अपने विस्तारवादी एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया है। अमेरिका के समर्थन के बिना, यूक्रेन को अपनी रक्षा बनाए रखना चुनौतीपूर्ण लग सकता है, जिससे क्षेत्रीय नुक़सान का जोखिम हो सकता है। अमेरिकी F-16 लड़ाकू विमानों की अनुपस्थिति यूक्रेन की हवाई श्रेष्ठता को कम कर सकती है, जिससे युद्ध के मैदान पर गतिशीलता प्रभावित हो सकती है। अमेरिका की कम उपस्थिति मास्को को बीजिंग के करीब ला सकती है, जिससे वैश्विक शक्ति सम्बंधों को नया आकार मिल सकता है।

चीन के साथ रूस के बढ़ते आर्थिक सम्बंध, विशेष रूप से ऊर्जा निर्यात में, इस भू-राजनीतिक बदलाव को दर्शाते हैं। यूरोपीय देशों को अमेरिकी वापसी से छोड़े गए शून्य को भरने के लिए क़दम उठाने की आवश्यकता हो सकती है, जिससे उनकी अर्थव्यवस्थाओं पर दबाव पड़ सकता है। जर्मनी और यू.के. ने पहले ही अमेरिकी अनिश्चितताओं के मद्देनजर नए सैन्य समर्थन के लिए प्रतिबद्धता जताई है। एक विखंडित पश्चिमी गठबंधन संघर्ष में गतिरोध पैदा कर सकता है, जिससे लंबे समय तक अस्थिरता बनी रह सकती है। कोरियाई युद्ध (1950-1953) इस बात की याद दिलाता है कि कैसे अनसुलझे महाशक्ति तनाव लंबे समय तक चलने वाले जमे हुए संघर्षों को जन्म दे सकते हैं। यूक्रेन से अमेरिका की कथित वापसी नाटो की सामूहिक रक्षा रणनीति को कमजोर कर सकती है। रूस की आक्रामकता को रोकने में असमर्थता बाल्टिक राज्यों और पूर्वी यूरोप के खिलाफ भविष्य के खतरों को भड़का सकती है। इससे यूरोपीय देशों पर सैन्य बोझ बढ़ेगा, जिससे उन्हें रक्षा ख़र्च बढ़ाने और सैन्य सहयोग बढ़ाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

यूरोपीय संघ की नई €50 बिलियन की सहायता पहल का उद्देश्य संभावित अमेरिकी वापसी के प्रभावों को कम करना है। सत्ता का शून्य रूस को पूर्वी यूरोप में नाटो के संकल्प को चुनौती देने के लिए प्रेरित कर सकता है। मोल्दोवा और बाल्टिक में रूसी हाइब्रिड युद्ध की रणनीति दर्शाती है कि मॉस्को पश्चिमी कमजोरियों का परीक्षण कैसे करता है। रूसी गैस पर निर्भर यूरोपीय देशों को नए सिरे से ऊर्जा संकट का सामना करना पड़ सकता है, जैसा कि 2022 नॉर्ड स्ट्रीम पाइपलाइन तोड़फोड़ की घटना से उजागर हुआ, जिसने ऊर्जा युद्ध के लिए यूरोप की संवेदनशीलता को उजागर किया। जवाब में, यूरोपीय देश अमेरिका पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए एक स्वतंत्र सुरक्षा ढांचा स्थापित करने की कोशिश कर सकते हैं। यूक्रेन के लिए चल रहा अमेरिकी समर्थन यूरोपीय सुरक्षा और वैश्विक स्थिरता दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

विदेशी भाषा में कैरियर में नौकरी के अवसर और विकल्प

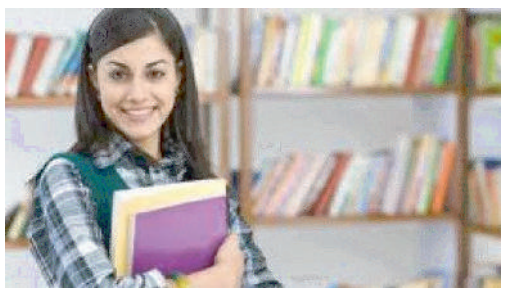

विजय गर्ग

विदेशी लैन में एक कैरियर विजय गर्ग गेज विभिन्न क्षेत्रों में कई अवसर प्रदान करते हैं। यहां कुछ कैरियर पथ आप पर विचार कर सकते हैं: 1. अनुवाद और व्याख्या अनुवादक - लिखित ग्रंथों (साहित्यिक, कानूनी, चिकित्सा, तकनीकी, आदि) के साथ काम करें। दुभाषिया - बैठकों, सम्मेलनों या राजनयिक सेटिंग्स में वास्तविक समय अनुवाद प्रदान करें। स्थानीयकरण विशेषज्ञ - विभिन्न क्षेत्रों के लिए अनुकूल सामग्री (वेबसाइट, गेम, ऐप)। 2. सरकार और राजनयिक सेवाएं विदेश सेवा अधिकारी - दूतावासों, वाणिज्य दूतावासों या अंतरराष्ट्रीय संगठनों में काम करते हैं। खुफिया विश्लेषक - राष्ट्रीय सुरक्षा और खुफिया के लिए भाषा कौशल का उपयोग करें। आव्रजन और सीमा शुल्क अधिकारी - वीजा प्रसंस्करण और सीमा सुरक्षा के साथ सहायता। 3. शिक्षा और शिक्षा भाषा शिक्षक - स्कूलों, विश्वविद्यालयों या ऑनलाइन प्लेटफार्मों में सिखाएं। भाषाविद - भाषा संरचनाओं और सांस्कृतिक प्रभाव पर अनुसंधान का संचालन करें। 4. व्यापार और कॉर्पोरेट क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रबंधक - वैश्विक परियोजनाओं पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ काम करें। विदेशी भाषा सामग्री निर्माता - विभिन्न भाषाओं में मीडिया सामग्री लिखें या बनाएं। ग्राहक सहायता प्रतिनिधि - विभिन्न भाषाओं में ग्राहकों की सहायता करें। 5. पर्यटन और आतिथ्य टूर गाइड - अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के साथ काम करें। होटल मैनेजर - लक्जरी होटलों में अंतरराष्ट्रीय मेहमानों को संभालें। फ्लाइट अटेंडेंट - विभिन्न देशों के यात्रियों की सहायता करें। 6. मीडिया और मनोरंजन उपशीर्षक और डबिंग विशेषज्ञ - फिल्म, टीवी या गेमिंग में काम करते हैं। विदेशी संवाददाता - मीडिया घरानों के लिए अंतरराष्ट्रीय समाचार रिपोर्ट करें। 7. हेल्थकेयर और मेडिकल फील्ड चिकित्सा दुभाषिया - रोगियों और डॉक्टरों को भाषाओं में संवाद करने में मदद करें। फार्मास्यूटिकल प्रतिनिधि - चिकित्सा बिक्री में वैश्विक कंपनियों के साथ काम करें।

कहानी : (घरेलू महिला)

विजय गर्ग

मोहन आज फिर लता को उसकी औकात दिखा कर दफ्तर के लिये निकल गया और वो दिखाये भी क्यों ना, क्योंकि लता एक घरेलू महिला है। वो कोई ज्यादा पढ़ी लिखी लड़की नहीं. न ही वो कोई कामकाजी सफल महिला है । उसका काम सिर्फ कपड़े धोना, खाना पकाना, बिस्तर लगाना, घर की सफाई करना, बच्चो को अच्छी शिक्षा देना, घर के बड़े-बूढों का ध्यान रखना और घर में आये मेहमानों का स्वागत करना ही तो हैं। इन सब काम की क्या अहमियत? यह तो कोई नौकरानी भी कर सकती हैं, यह सब सोचकर लता ने अपने गालों से आँसुओं की बूंदों को साफ किया और फिर से अपने कामों मे जुट गई।

रोज की तरह मोहन का फोन आया कि वह देर से घर आयेगा, खाना बाहर ही खायेगा। लता समझ गई थी कि पियेगा भी बाहर। पहले तो लता रोज मोहन से इस बात के लिए लड़ती थी और वो यह कहकर फटकार देता है कि वो मेहनत करता है और कमाता हैं। वो जो चाहे करे पर अब तो जैसे वो थक चुकी थी । वह मोहन के मुँह ही नही लगना चाहती थी क्योंकि वह कई बार कह चुका था कि उसे इस घर की जरूरत है ना कि इस घर को उसकी जरूरत । वो जब चाहे इस घर को छोड़कर जा सकती हैं। लता यह सोचकर चुप हो जाती कि शायद मोहन सही कह रहा हैं वो जायेगी भी कहॉ? मायका तो बचपन से ही पराया होता है। अगर घर की बेटी चार दिन भी ज्यादा रूक ले तो आस पड़ोस वालो के कान खड़े हो जाते है, नाते रिश्तेदार चुटकियॉ लेना शुरू कर देते है और बात मॉ बाप की ईज्जत पर बन आती है यही सब सोचकर लता अपमान के घूंट पी जाती हैं।

अगले दिन लता की तबियत कुछ ठीक सी नहीं लग रही थी। उसने नापा तो उसे बुखार था। लता ने घर पर ही रखी दवा ले ली और जैसे तैसे नाश्ता और बच्चो का टिफ़नि लगा दिया और कमरे में जाकर लेट गई। मोहम यह कह कर चला गया कि डाक्टर को दिखा लेना।

शाम तक लता का बुखार बढ़ गया उसकी तबियत में जरा भी सुधार नही हुआ, उसने मोहन को फोन की तो उसने कहा वो घर आते वक्त दवा लेता आयेगा।

मोहन ने लता के पास दवा रख दी और कहा ले लो। क्योंकि उसने दवा लाने का इतना महान काम जो किया। पत्नी ऐसा नही कर सकती वो दवा देगी और प्यार से उसके माथे पर हाथ भी फेरेगी।

उधर सासु मॅं ने खाना बनाकर आज रात के लिऐ यह मोहर लगा दी कि वाकई में इस घर को लता की जरूरत नही। रात को लता ने खाना नही खाया। वो बैचेन होकर तड़प रही थी। उधर मोहन चैन की नींद सो रहा था। सोये भी क्यों न उसे अगले दिन काम पर जो जाना था, वो कमाता हैं, इस घर को उसकी बहुत आवश्यकता हैं।

अगले दिन मोहन दवा ले लेना कहकर चला गया और रात के डाक्टर के पास चलना, अपना महान फ़र्ज़ निभाकर चला गया। उधर सास ने भी बीमारी मे हाथ पैर चलाने की नसीहत देकर महानता का उदाहरण दे दिया। शाम को लता की तबियत और बिगड़ गई, सास ने मोहन को फोन की। उसने कहा वो अभी आता है पर मोहन को यह कहे भी एक घण्टा हो गया। फिर मोहन को दोबारा फोन की तब तक लता मौत के करीब पहुँच चुकी थी।

मोहन घर आकर उसे अस्पताल ले गया तब तक लता मर चुकी थी। अब लता को किसी की जरूरत नही थी, पर अब लता की सबको जरूरत थी।

आज लता की तेरहवीं हो चुकी थी, दिलासा देने वाले मेहमान सब जा चुके थे, अब मोहन को दफ्तर जल्दी नही जाना था ,जाता भी कैसै अब उसे घर के बहुत से काम करने थे जो लता के होने पर उसे पता भी नही चलता था, आज उसे पता लगा इस घर को लता की कितनी जरूरत है। आज उसको अपने तौलिये, रूमाल ,अपनी दफ्तर की फाईल यहॉ तक की वो छोटी छोटी चीज़े जिसका उसे आभास भी नही था, नही मिल रही थी। उसे पता भी नही था कि उसे लता की कितनी जरूरत हैं। आज लता के जाने के बाद घर ,घर नही चिड़ियाघर नजर आता था। सास की दवाई और बच्चो को समय पर खाना नही मिलता था, मोहन को रात को अपना बिस्तर लगा नही मिलता था। आज मोहन का घर पर इन्तजार करने वाला कोई नही था। उसको किसी को बताने की आवश्यकता नही की वो कहॉ है और कब आयेगा, क्योकि कोई पूछने वाला ही नही। आज मोहन को लता की बहुत जरूरत है। पर लता को यह साबित करने के लिए कि मेरी भी जरूरत है सबको...मौत को गले लगाना पड़ा। उसे अपनी अहमियत बताने के लिये इस दुनिया से विदा होना पड़ा। आज सबने मान लिया की लता को इस घर की नही, इस घर को लता की ज्यादा जरूरत हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

जीवन के हर मोर्चे पर समानता के आकार फैले:

विजय गर्ग

आत्माओं का वही चमकीला रंग भी अतीत में फैल गया। कब। सेना में महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन देने का फ़ैसला किया गया. सुप्रीम कोर्ट के फैसले में शक्तिस्वरूपा मानी जाने वाली महिलाओं को समानता देने की बात कही गई है। सुप्रीम कोर्ट ने इस अहम फ़ैसले में कहा है कि जो भी महिला अधिकारी इस विकल्प का विकल्प चुनना चाहती है उन्हें तीन महीने के भीतर सेना के भीतर स्थायी कमीशन दिया जाना चाहिए. अदालत ने सरकार की याचिका को महिला कमांड पोस्ट नहीं देने के पीछे शारीरिक क्षमताओं और सामाजिक मानदंडों का हवाला देते हुए बताया। अदालत ने कहा है कि महिलाओं को सामाजिक और मानसिक कारण बताकर इस अवसर से वंचित करना न केवल भेदभावपूर्ण है, बल्कि अस्वीकार्य भी है। 'यह सुखद है कि इस सटीक टिप्पणी के कारण, यह निर्णय अन्य मोर्चों पर भी महिलाओं के जीवन में बदलाव लाने की नींव बनाएगा।

सोच घर से ऑफिस में बदल जाएगी

हमारे सामाजिक-पारिवारिक ढांचे में, महिलाओं के साथ सभी प्रकार के भेदभाव का मूल कारण उनकी शारीरिक क्षमताओं को कम करना और सामाजिक मोर्चे पर पीछे समझना है। जबकि पिछले कुछ सालों में महिलाओं ने हर मोर्चे पर ख़ुद को साबित किया है. अंतरिक्ष से लेकर सामाजिक कारणों की आवाज़ बनने तक कई उपलब्धियाँ न सिर्फ़ अपनी हैं बल्कि देश की भी हैं. इस मामले में, यह निर्णय समाज की निश्चित सोच को नई दिशा देने वाला साबित होगा। महिलाओं के विचारों और निर्णयों को घर में महत्व दिया जाएगा। कार्यालय में उच्च पदों तक पहुंचकर अपनी क्षमता साबित करने के अवसर होंगे। हमारी क्षमता और क्षमता के बावजूद, यह निर्णय उन महिलाओं के लिए उत्साहजनक साबित होगा जो कई मोर्चों पर पीछे रह जाने का दर्द जीते हैं। ऐसे फ़ैसले पूरे समाज की सोच को भी नया रंग देते हैं.

नेतृत्व की भूमिका पर जोर

यहां महिलाओं की नेतृत्व योग्यता को नज़रअंदाज़ करना आम बात है। ऐसे में अब आर्ड फोर्सेस की भूमिका में महिला शक्ति का आना अन्य क्षेत्रों में महिलाओं के नेतृत्व गुणों को स्वीकार करने का विचार लाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने ये भी कहा है कि महिलाओं को पोस्टिंग कमांड करने का अधिकार मिलना चाहिए. यह ध्यान देने योग्य है कि एक कमांड पोस्टिंग एक पोस्टिंग है जो एक यूनिट की ओर ले जाती है। कोरिया की कमान। देखा जाए तो सेना या समाज के रूढ़ियों के पहलू में समानता याना महिलाओं का संवैधानिक अधिकार है. ऐसे में इन बदलावों से सेना में शामिल होने के लिए नई पीढ़ी का आकर्षण भी बढ़ेगा. रक्षा क्षेत्र में उनकी भागीदारी बढ़ेगी। जिन महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन मिलता है, उन्हें वितीय भत्ते और पदोन्नति पाने के समान अवसर भी मिलेंगे। स्थायी कमीशन लागू होने के बाद, सभी प्रकार की सुविधाएं और पेंशन उपलब्ध होंगी।

स्थायी कमीशन

सेना में स्थायी कमीशन मिलने के बाद महिला अधिकारी रिटायरमेंट की उम्र तक सेना में काम कर सकेंगी. हां, आप चाहें तो नौकरी छोड़ना चाहें तो छोड़ सकते हैं। शॉर्ट सर्विस कमीशन के तहत सेना में काम करने वाली महिला अधिकारियों को अब स्थायी कमीशन चुनने का विकल्प दिया गया है, और महिला अधिकारी भी स्थायी कमीशन मिलने के बाद पेंशन की हकदार होंगी। अब तक, वह लघु सेवा आयोग के माध्यम से भर्ती होने के बाद 14 साल के लिए सेना में कार्यरत थी। 14 साल बाद महिला अधिकारियों को रिटायर कर दिया गया.

पूरा माहौल बदल सकता है

लैंगिक समानता के बिना महिलाओं से जुड़ी स्थिति नहीं बदल सकती. लैंगिक भेदभाव की सोच और व्यवहार को खत्म करना उसालाकिर को मिटाने जैसा है, जो महिलाओं की क्षमता को एक हद तक कम कर देता है। इस सीमा को समाप्त करना होगा, जो उनका दायरा निर्धारित करती है। इसी तरह, हर मोर्चे पर समानता का अधिकार उसका मानवीय अधिकार है। इसके साथ ही महिलाओं का हिस्सा बराबर आया. और सम्मानजनक माहौल बनाकर हमारा पूरा माहौल भी बदल सकता है। इसलिए, प्रयास यह होना चाहिए कि महिलाओं को अपने हिस्से का हर अधिकार मिले।

सेवानिवृत्त प्रमुख शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर

एक अप्रैल से बदल जाएंगे जीएसटी के नियम, जानिए आपकी जेब पर कितना पड़ेगा असर

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि वस्तु एवं सेवा कर (GST) की दरें और कम की जाएंगी क्योंकि टैक्स स्लैब को युक्तिसंगत बनाने की प्रक्रिया लगभग पूरी होने वाली है। राजस्व तटस्थ दर (आरएनआर) जो जुलाई 2017 में जीएसटी लागू होने के समय 15.8 प्रतिशत थी अब 2023 में घटकर 11.4 प्रतिशत हो गई है तथा इसमें और कमी आएगी।

नई दिल्ली। जीएसटी डाटा को चुराना और जीएसटी में फर्जीवाड़ा करना अब आसान नहीं होगा। आगामी एक अप्रैल से जीएसटी में पंजीकृत सभी यूजर्स के लिए मल्टी फैक्टर ऑथेंटिकेशन (एमएफए) नियम लागू होने जा रहा है।

एमएफए के लागू होने से जीएसटी इस्तेमाल करने वाले किसी अन्य यूजर के डाटा को चुराना और जीएसटी में किसी प्रकार का फर्जीवाड़ा करना आसान नहीं होगा।

जीएसटी पोर्टल पर अपडेट करें नंबर

एमएफए के तहत वन टाइम पासवर्ड (ओटीपी) के बिना यूजर लॉग-इन नहीं कर पाएंगे। इसलिए सभी यूजर को इस माह में जीएसटी पोर्टल पर अपने फोन नंबर को अपडेट कर लेना चाहिए ताकि ओटीपी प्राप्त करने में कोई दिक्कत नहीं हो।

एक अप्रैल से सभी यूजर्स के लिए अनिवार्य

इस साल एक जनवरी से प्रयोगात्मक तौर पर 20 करोड़ से अधिक टर्नओवर वालों के लिए एमएफए को लागू किया गया था। फिर गत एक फरवरी से पांच करोड़ टर्नओवर वालों के लिए अनिवार्य किया गया। अब एक अप्रैल से सभी यूजर्स के लिए इसे अनिवार्य किया जा रहा है।

कारोबारियों के लिए नया अपडेट

एक अप्रैल से ई-वे बिल के नियम में भी बदलाव किया जा रहा है। एक अप्रैल से 10 करोड़ से अधिक टर्नओवर वाले कारोबारियों को 30 दिनों के भीतर अपने ई-इनवायस की जानकारी इनवॉयस रजिस्ट्रेशन पोर्टल (आईआरपी) में पर देना अनिवार्य होगा। 30 दिनों के भीतर जानकारी नहीं देने पर इनवॉयस खारिज हो जाएगा। अभी यह नियम 100 करोड़ और उससे अधिक टर्नओवर वालों के लिए लागू है।

होटल के रेस्टोरेंट में खाना हो सकता है महंगा

आगामी एक अप्रैल से होटल के रेस्टोरेंट में खाना थोड़ा महंगा हो सकता है। एक अप्रैल से 7500 रुपए से कम रूम किराए वाले होटल के लिए 18 प्रतिशत जीएसटी के साथ इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) लेने की सुविधा उपलब्ध होगी।

अभी जिन होटल में कमरे का किराया 7500 रुपए से कम है, वहां के रेस्टोरेंट में खाना खाने पर पांच प्रतिशत जीएसटी लगता है। अगर ये होटल वाले 18 प्रतिशत जीएसटी के साथ आईटीसी की सुविधा को अपनाते हैं तो यहां के रेस्टोरेंट में खाना महंगा हो जाएगा।

आगामी एक अप्रैल से पुरानी सामान्य एवं इलेक्ट्रिक कार की बिक्री पर 12 प्रतिशत की जगह 18 प्रतिशत जीएसटी लगेगा। सेकेंड हैंड कारों की बिक्री करने वाली एजेंसियों के लिए यह नियम लागू होगा।

शेयर बाजार में मार्च के पहले हफ्ते में विदेशी निवेशकों ने 24,753 करोड़ रुपये निकाले, जनवरी-फरवरी के आंकड़े हैं चौंकाने वाले

परिवहन विशेष न्यूज

विदेशी निवेशक लगातार पैसै निकाल रहे हैं। नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेज के आंकड़ों के अनुसार मार्च के पहले सप्ताह में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों द्वारा शुद्ध बिक्री 24753 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। लगातार बिक्री के दबाव ने बाजार स्थिरता के बारे में चिंताएं बढ़ा दी है। साथ ही विदेशी निवेशक भारत के आर्थिक और कॉर्पोर्ट प्रदर्शन के बारे में सतर्क हैं।

नई दिल्ली। भारतीय शेयर बाजार से विदेशी निवेशक लगातार पैसै निकाल रहे हैं। नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेज (एनएसडीएल) के आंकड़ों के अनुसार, मार्च के पहले सप्ताह में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) द्वारा शुद्ध बिक्री 24,753 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है।

बाजार स्थिरता के बारे में बढ़ी चिंता

2025 में कुल शुद्ध निकासी 1, 37, 354 करोड़ रुपये हो गई है। लगातार बिक्री के दबाव ने बाजार स्थिरता के बारे में चिंताएं बढ़ा दी है। साथ ही विदेशी निवेशक भारत के आर्थिक और कॉर्पोर्ट प्रदर्शन के बारे में सतर्क हैं।

लगातार हो रही बिक्री के कारणों के बारे में बात करें तो, भारतीय कंपनियों से कमजोर आय, उम्मीद से धीमी जीडीपी वृद्धि और अमेरिकी डॉलर इंडेक्स में तेज वृद्धि शामिल है। मूल्यांकन संबंधी चिंताओं ने भी एफपीआई पलायन में योगदान दिया है।

जनवरी और फरवरी में कैसा रहा हाल

पिछले महीने फरवरी की बात करें तो, विदेशी निवेशकों ने 34, 574 करोड़ रुपये के शेयर बेचे थें। जनवरी में एफपीआई ने भारतीय शेयर बाजार से 78.027 करोड़ रुपये निकाले हैं। 2024 में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) प्रवाह में भारी गिरावट दर्ज किया गया था।

होली पर 60 हजार करोड़ रुपये के व्यापार का अनुमान, चीनी रंग और गुलाल से लोगों ने बनाई दूरी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। होली आने में अभी पांच दिन का समय बाकी है, लेकिन देश के अलग-अलग हिस्सों में लोगों पर होली का रंग सर चढ़कर बोल रहा है। बाजार होली के रंग, पिचकारी से लेकर स्वादिष्ठ मिष्ठान्नों से भर गया है। जगह-जगह पर होली के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं और लोग खूब जमकर होली के गानों पर थिरक रहे हैं। होली के इन कार्यक्रमों का असर सीधे बाजार पर दिखाई दे रहा है और बाजार में भी तेजी देखी जा रही है। इस वर्ष अकेले होली पर देश भर में 60 हजार करोड़ रुपये का व्यापार होने का अनुमान है। इससे व्यापारी वर्ग उत्साह में है। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री और चांदनी चौक से भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने कहा है कि इस बार भी होली की त्योहारी बिक्री में चीन के बने हुए सामान का व्यापारियों एवं ग्राहकों ने बहिष्कार किया है। लोग केवल भारत में ही बने हर्बल रंग एवं गुलाल, पिचकारी, गुब्बारे, चंदन, पूजा सामग्री, परिधान सहित अन्य सामान खरीद रहे हैं। इससे भारतीय उत्पादकों और विक्रेताओं को जबरदस्त लाभ हो रहा है। बाजारों में रंग-गुलाल में सबसे ज्यादा मांग हर्बल रंगों की हो रही है। लोग भारतीय उत्पादकों के द्वारा बनाए गए हर्बल उत्पादों की खरीद को प्राथमिकता दे रहे हैं। रंग, पिचकारी, गुलाल, अबीर, गुब्बारे, मिठाइयां और होली खेलने के लिए बने विशेष कपड़ों की बाजारों में सबसे तेजी से मांग देखी जा रही है। बाजारों में उपभोक्ताओं की यह भीड़ होली के बाद नवरात्रों तक बने रहने का अनुमान है।

पिछली बार से 20 प्रतिशत ज्यादा व्यापार

कैट के अनुसार, इस वर्ष होली का त्योहार 60,000 करोड़ रुपये से अधिक का हो सकता है। पिछले वर्ष की तुलना में यह लगभग 20% अधिक है। पिछले वर्ष दूसरे मामलों में बाजार में कमजोरी रहने के बाद भी इसी दौरान होली पर पूरे देश में लगभग 50 हजार करोड़ रुपये का व्यापार हुआ था। इस बार अकेले देश की राजधानी दिल्ली में ही लगभग 8 हजार करोड़ से अधिक के व्यापार होने की संभावना है।

गुजरात: शाह बोले- पीएम मोदी के नेतृत्व में सहकारी क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल, मंत्रालय ने शुरू कीं 60 से अधिक पहल

केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने सहकारी क्षेत्र के भविष्य को उज्ज्वल बताते हुए कहा कि केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार के तहत 60 से अधिक पहलों की शुरुआत की गई है। उन्होंने अहमदाबाद जिला सहकारी बैंक की सफलता की सराहना की, जो छोटे किसानों और पशुपालकों की मदद कर रहा है।

नई दिल्ली। केंद्रीय सहकारी मंत्री अमित शाह ने रविवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सहकारी क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल है और उनके मंत्रालय ने अब तक 60 से अधिक पहलों की शुरुआत की है। अहमदाबाद जिला सहकारी बैंक के स्वर्णिम शताब्दी समापन महोत्सव में शाह ने कहा कि यह बैंक छोटे लोगों का बड़ा बैंक हैं, जिसने वर्षों से किसानों और पशुपालकों के जीवन में समृद्धि लाने का काम किया है।

उन्होंने कहा, 'प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सहकारी मंत्रालय ने पिछले पांच वर्षों में दो लाख प्राथमिकी सहकारी समितियों का पंजीकरण सुनिश्चित किया, जिसमें सेवा सहकारी समितियां और प्राथमिक दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियां शामिल हैं।'

शाह ने कहा कि सहकारी समितियों को अब न केवल मेडिकल स्टोर खोलने की अनुमति दी जा रही है, बल्कि उन्हें पेट्रोल पंप और गैस वितरण सेवाओं के लिए भी कोटा दिया जा रहा है। इसके साथ ही उन्हें सब्सिडी वाले अनाज वितरण में भी प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने यह भी कहा, सहकारी समितियां गोदाम निर्माण और जल आपूर्ति परियोजनाओं में भी भाग ले सकती हैं और जब तक सहकारी समितियां मजबूत नहीं होंगी, तब तक सहकारी बैंक भी मजबूत नहीं हो सकते।

उन्होंने यह भी बताया कि देश में 260 जिला सहकारी बैंकों में से अहमदाबाद जिला सहकारी बैंक (एडीसी) अकेला ऐसा बैंक है, जो भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के दिशानिर्देशानुसार सौ फीसदी ई-बैंकिंग सुविधा प्रदान करता है।

शाह ने यह भी कहा कि जब वह पच्चीस साल पहले इस बैंक के अध्यक्ष बने थे, तो बैंकों की स्थिति पर सवाल उठाए जा रहे थे, लेकिन एक साल में बैंक ने लाभ अर्जित किया और डिविडेंड भी बांटा। आज यह बैंक सौ करोड़ रुपये का लाभ कमा चुका है और इसके पास शून्य एनपीए (नॉन-परफॉर्मिंग एसेट्स) है, जो एक बड़ी उपलब्धि है। इसके बाद शाह ने अहमदाबाद में 'अखंड आनंदोत्सव' के दौरान 24 पुस्तकों का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि गुजराती भाषा और साहित के प्रचार-प्रसार में यह संस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस मौके पर मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि यह संस्था सिर्फ एक प्रेस नहीं, बल्कि एक ऐसा संस्थान है, जो समाज को भाषा, साहित्य और शिक्षा के माध्यम से मार्गदर्शन दे रहा है। गृह मंत्री शाह ने जैन आचार्य श्रीमद बुद्धिसागर सूरिश्वर महाराज की 150वीं जयंती पर एक स्मारक सिक्का जारी किया।

देश को एससी एसटी महिला राष्ट्रपति नही, प्रधानमंत्री चाहिए, तब सच होगा महिला सशक्तिकरण का सपना: रजत कल्सन

एससी एसटी महिलाओं के साथ बर्बर यौन हिंसा रोके बिना महिला दिवस पर बड़ी-बड़ी बातें करना फिजूल : रजत कल्सन

हिसार/हांसी/8 मार्च

पूरी दुनिया में आज महिला दिवस मनाया जा रहा है, इस बारे में बात करते हुए नेशनल अलायन्स फ़ॉर दलित ह्यूमन राइट्स के संयोजक रजत कलसन ने कहा कि महिलाओं के सशक्तिकरण की बातें केवल भाषणों में हो रही है तथा महिलाओं के लिए संवैधानिक अधिकार तथा कानून का फायदा केवल कुलीन घरों की महिलाओं तक ही पहुंचा है जबकि गरीब व एससी-एसटी समाज की महिलाएं अभी भी महिला सशक्तिकरण के मामले में अभी भी हाशिये पर हैं। कलसन ने कहा कि भारत में आज भी सर्वसमाज की महिलाओं की स्थिति बेहद दयनीय है। दहेज के नाम पर आज भी वधुओं की बलि ली जाती है तथा उनके साथ घरेलू हिंसा की जाती है। अगर एससी एसटी महिलाओं की बात करें तो स्थिति बेहद गंभीर व चिंतनीय है। पूरे देश में दलित महिलाओं तथा बच्चियों के साथ पुलिसिया सरक्षण में बर्बर यौन हिंसा हो रही है

तथा दलित महिलाओं के साथ यौन बर्बरता के मामले में राजनेता व पुलिस अधिकारी जानबूझकर शांत बैठे रहते हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े चीख चीख कर बता रहे हैं कि देश में एससी एसटी समाज की महिलाएं सुरक्षित नहीं है फिर देश के प्रधानमंत्री ,राष्ट्रपति तथा गृहमंत्री अपनी आंखें मूंद कर बैठे हुए हैं। कलसन ने कहा कि दुख की बात यह है कि महिलाओं के लिए बने सुरक्षा कानूनो के दुरुपयोग का पुलिस, सरकार व मीडिया रोना रो रहे हैं ।

कलसन ने कहा कि कोई भी राजनीतिक पार्टी एससीएसटी महिलाओं को सत्ता में भागीदारी देने के लिए तैयार नहीं है। कल्सन ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने हालांकि एक आदिवासी महिला को भारत का राष्ट्रपति बनाया है लेकिन सभी जानते हैं कि भारत का राष्ट्रपति एक रबर स्टैंप होता है जिसके पास नाम मात्र की शक्तियां होती हैं उन्होंने कहा कि अगर राजनीतिक पार्टियों वाकई में महिलाओं खासकर एससी एसटी समाज की महिलाओं का उत्थान करना चाहती हैं और उनका सशक्तिकरण करना चाहती हैं तो आम चुनावों से पहले अपने मेनिफेस्टो में एससी एसटी समाज की महिलाओं को देश के प्रधानमंत्री व राज्यों के मुख्यमंत्री के पद देने की घोषणा करें लेकिन राजनीति दल वैसा नहीं करेंगे क्योंकि उन्हें डॉ अंबेडकर की फोटो दिखाकर व संविधान की प्रति लहराकर एससी एसटी समाज के वोट हासिल करने हैं जब सत्ता में भागीदारी की बात आती है तो ऊंची जाति की कुलीन घरानों की महिलाएं को मोके दिए जाते हैं। कलसन ने कहा कि डॉक्टर बीआर अंबेडकर ने एक बार कहा था कि अगर किसी समाज की प्रगति मापनी हो तो हमें उसे समाज की महिलाओं की प्रगति पहले मापनी पड़ेगी जिस समाज की वह देश की महिलाएं सशक्त होंगी वह देश व समाज अपने आप सशक्त हो जाएगा कलसन ने कहा की भारत में मूल निवासी, एससी एसटी समाज की महिलाओं की दशा बद से बदतर है और जब तक इन महिलाओं को समान धारा में नहीं लाया जाएगा व इन्हें सशक्त नहीं किया जाएगा तब तक भारत को विश्व गुरु बनाने की बातें बेमानी है।

अपनी मंज़िल के लिए अपनी राहें चुनती महिलाएँ।

आज, लड़कियाँ उच्च शिक्षा और कौशल विकास में लड़कों के बराबर शैक्षिक उपलब्धियाँ हासिल कर रही हैं, 50% से अधिक युवतियाँ कक्षा 12 तक की पढ़ाई पूरी कर रही हैं और 26% कॉलेज की डिग्री प्राप्त कर रही हैं। युवा महिलाएँ विभिन्न प्रकार के करियर विकल्पों और डिजिटल कौशल प्लेटफ़ॉर्म की उपलब्धता से प्रेरित होकर पेशेवर योग्यता पर अधिक ज़ोर दे रही हैं। स्किल इंडिया मिशन और एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) फ़ॉर गर्ल्स इंडिया जैसी पहलों ने तकनीकी विषयों में युवा महिलाओं की भागीदारी को काफ़ी हद तक बढ़ा दिया है। आज महिलाओं को पहले की तुलना में कहीं ज़्यादा आज़ादी मिली हुई है। सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर वे अपने भविष्य की ज़िम्मेदारी ख़ुद उठा रही हैं। कई तरह के संघर्षों और चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, महिलाएँ उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर रही हैं।

प्रियंका सौरभ

पिछले दस वर्षों में, युवा भारतीय महिलाओं के लक्ष्यों और महत्त्वाकांक्षाओं में उल्लेखनीय बदलाव आया है, जो उनकी बढ़ती स्वतंत्रता, शैक्षिक उपलब्धियों और कार्यबल में भागीदारी को दर्शाता है। यह बदलाव भारत के सामाजिक ताने-बाने को महत्त्वपूर्ण रूप से बदल रहा है। आज, लड़कियाँ उच्च शिक्षा और कौशल विकास में लड़कों के बराबर शैक्षिक स्तर प्राप्त कर रही हैं, जिसमें 50% से अधिक कक्षा 12 पूरी कर रही हैं और 26% ने कॉलेज की डिग्री हासिल की है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण उच्च शिक्षा में महिलाओं के नामांकन की बढ़ती प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है, जिसमें महिला सकल नामांकन अनुपात 27.3% तक बढ़ गया है। युवा महिलाएँ अब अपने पेशेवर लक्ष्यों पर अधिक ज़ोर दे रही हैं, जो विभिन्न कैरियर अवसरों और डिजिटल कौशल प्रशिक्षण तक पहुँच से प्रेरित है। स्किल इंडिया मिशन और एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) फ़ॉर गर्ल्स इंडिया जैसी पहलों ने तकनीकी क्षेत्रों में युवा महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाया है। विवाह की औसत आयु 2005 में 18.3 वर्ष से बढ़कर 2021 में 22 वर्ष हो गई है, जिसमें कई युवा महिलाएँ अनुकूलता के आधार पर साथी चुन रही हैं।

एक रिपोर्ट बताती है कि अब 52% महिलाओं को अपने साथी चुनने का अधिकार है, जो 2012 में 42% से अधिक है। कई महिलाएँ आर्थिक स्वतंत्रता भी प्राप्त कर रही हैं, विशेष रूप से उद्यमिता के माध्यम से, जो महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप के लिए सरकारी पहलों द्वारा समर्थित है। उदाहरण के लिए, नीति आयोग द्वारा महिला उद्यमिता मंच ने 10, 000 से अधिक महिला उद्यमियों का एक नेटवर्क बनाया है। युवा महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय शासन में अधिक भागीदारी के साथ, राजनीति में अधिक सक्रिय हो रही हैं। ग्रामीण महिलाओं के बीच स्वयं सहायता समूहों की सदस्यता 2012 में 10% से बढ़कर 2022 में 18% होने की उम्मीद है। ये उभरती हुई आकांक्षाएँ पारंपरिक सामाजिक मानदंडों और संरचनाओं को चुनौती दे रही हैं। जैसे-जैसे अधिक महिलाएँ कार्यबल में प्रवेश कर रही हैं, घरों में पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ बदल रही हैं। मनरेगा कार्यक्रम पुरुषों और महिलाओं के लिए समान वेतन सुनिश्चित करता है, जो ग्रामीण परिवार की गतिशीलता को प्रभावित करता है। शिक्षा और आय में वृद्धि के साथ, युवा महिलाएँ अपने परिवारों के भीतर वित्तीय और सामाजिक निर्णयों पर अधिक प्रभाव प्राप्त कर रही हैं। स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण महिलाओं को घरेलू वित्त का सामूहिक रूप से प्रबंधन करने के लिए सशक्त बनाया है।

भारतीय महिलाएँ ऊर्जा, दूरदर्शिता, जीवंतता और चुनौतियों पर विजय पाने की दृढ़ प्रतिबद्धता का प्रतीक हैं। जैसा कि भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने खूबसूरती से व्यक्त किया है, महिलाएँ सिर्फ़ घर की रोशनी ही नहीं हैं, बल्कि उस रोशनी को जलाने वाली लौ भी हैं। पूरे इतिहास में, महिलाओं ने मानवता को प्रेरित किया है, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, जिन्होंने समाज में परिवर्तनकारी बदलाव का उदाहरण पेश किया है। भारत सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण क़दम उठा रहा है, जिसका लक्ष्य 2030 तक सभी के लिए एक बेहतर दुनिया बनाना है। इन लक्ष्यों का एक प्रमुख लक्ष्य लैंगिक समानता को बढ़ावा देना और महिलाओं को सशक्त बनाना है। वर्तमान में, प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण और समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने पर ज़ोर दिया जा रहा है। महिलाओं के अंतर्निहित नेतृत्व गुण समाज के लिए अमूल्य हैं। जैसा कि अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने समझदारी से कहा था, एक पुरुष को शिक्षित करने से एक व्यक्ति को लाभ होता है, लेकिन एक महिला को शिक्षित करने से पूरी पीढ़ी को लाभ होता है। स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से, महिलाएँ न केवल ख़ुद को ऊपर उठा रही हैं, बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था को भी मज़बूत कर रही हैं।

सरकार से मिल रही निरंतर वित्तीय सहायता के साथ, आत्मनिर्भर भारत पहल में उनकी भूमिका प्रतिदिन बढ़ रही है। पिछले 6-7 वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों के आंदोलन ने महत्त्वपूर्ण गति पकड़ी है, जिसके साथ अब पूरे देश में 7 मिलियन समूह सक्रिय हैं। महिलाओं की ताकत को पहचानना हमें उपलब्धि की नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा। आइए उनकी प्रगति और सफलता का समर्थन करें। 'अमृत काल' महिलाओं के व्यापक सशक्तिकरण के लिए समर्पित समय हो। युवा भारतीय महिलाओं की बढ़ती आकांक्षाएँ भारत के सामाजिक परिदृश्य को नया आकार दे रही हैं, एक ऐसे समाज का निर्माण कर रही हैं जहाँ लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण मानक हैं। सहायक नीतियों को लागू करने से इस परिवर्तन में और तेज़ी आ सकती है, जिससे अधिक समावेशी और सशक्त भविष्य बन सकता है। आज महिलाओं को पहले की तुलना में कहीं ज़्यादा आज़ादी मिली हुई है। सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर वे अपने भविष्य की ज़िम्मेदारी ख़ुद उठा रही हैं। कई तरह के संघर्षों और चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, महिलाएँ उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर रही हैं। उन्हें अब कमज़ोर लिंग के रूप में नहीं देखा जाता। समान अवसर दिए जाने पर, महिलाएँ अपना रास्ता ख़ुद तय कर सकती हैं। हालाँकि, इन अवसरों तक पहुँचना एक बड़ी बाधा बनी हुई है।

जब महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं, तो वे किसी भी तरह की हिंसा को बर्दाश्त नहीं करती हैं। समाज में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने में प्रत्येक व्यक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। चूँकि समाज व्यक्तियों से बना होता है, इसलिए हर स्तर पर सामूहिक प्रयास सार्थक बदलाव ला सकते हैं। जब हर कोई महिलाओं का सम्मान करना शुरू कर देगा, तो समग्र स्थिति में सुधार होगा।

पर्यावरण पाठशाला : प्रकृति से जुड़ाव - मानसिक शांति और स्वास्थ्य का मूलमंत्र

डॉ. अंकुर शरण

आज की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी में लोग अपने कामकाज और डिजिटल दुनिया में इतने व्यस्त हो गए हैं कि प्रकृति से उनका संबंध कमजोर पड़ता जा रहा है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दिन में कुछ समय प्रकृति के साथ बिताना न केवल मानसिक शांति देता है, बल्कि यह हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी बेहद लाभकारी होता है? सुबह-शाम पार्क में टहलना, पेड़ों की छांव में बैठना, पौधों को पानी देना और प्रकृति के साथ समय बिताना, यह सब हमारे जीवन को संतुलित और खुशहाल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रकृति से जुड़ाव क्यों है ज़रूरी?

मानसिक तनाव से मुक्ति

वैज्ञानिक अध्ययनों से साबित हुआ है कि हरियाली में समय बिताने से स्ट्रेस हार्मोन (कॉर्टिसोल) का स्तर कम होता है, जिससे मानसिक तनाव दूर होता है। प्रकृति के बीच बैठने से मन में शांति और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार

सुबह-शाम पार्क में ब्रिस्क वॉक करने से हृदय स्वस्थ रहता है, रक्त संचार बेहतर होता है और शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। ताजी हवा में टहलना श्वसन तंत्र को भी मजबूत करता है।

इम्यूनिटी बढ़ाने में सहायक

पेड़-पौधों के बीच रहने से हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि प्राकृतिक वातावरण में रहने से शरीर में आवश्यक एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिन डी का स्तर बढ़ता है, जिससे बीमारियों से लड़ने की ताकत मिलती है।

भावनात्मक संतुलन बनाए रखता है

प्रकृति से जुड़ने से हमारा मन हल्का और खुशहाल महसूस करता है। यह डिप्रेशन और एंग्जायटी जैसी समस्याओं को कम करने में मदद करता है। खासतौर पर जब हम पेड़ों की छांव में बैठते हैं या नंगे पैर घास पर चलते हैं, तो यह हमारे मस्तिष्क को रिलैक्स करने में मदद करता है।

पर्यावरण संरक्षण में योगदान

जब हम पेड़ों के नीचे बैठते हैं, पौधों को पानी देते हैं या हरियाली का आनंद लेते हैं, तो इससे हमें प्रकृति के महत्व का एहसास होता है और हम पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होते हैं।

कैसे शुरू करें?

हर दिन कम से कम 30 मिनट पास के पार्क में टहलें।

पेड़ों की छांव में बैठकर ध्यान (मेडिटेशन) करें।

घर के आसपास पेड़-पौधे लगाएं और उनकी देखभाल करें।

बच्चों को भी प्रकृति से जोड़ें ताकि वे हरियाली का महत्व समझ सकें।

प्रकृति हमारी सबसे बड़ी गुरु और सबसे सच्ची मित्र है। यदि हम हर दिन कुछ समय प्रकृति के साथ बिताते हैं, तो यह न केवल हमारी मानसिक शांति को बढ़ाता है, बल्कि हमें एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन भी प्रदान करता है। प्रकृति से जुड़ें, हरियाली को अपनाएं और अपने जीवन को संतुलित बनाएं। यही सही मायनों में एक सुखी और स्वस्थ जीवन का मूलमंत्र है।

indiangreenbuddy@gmail.com

अपने जीवन को आनंद से भरे : प्रेम रावत

परिवहन विशेष न्यूज

देहरादून : अंतर्राष्ट्रीय वक्ता, लेखक एवं शांति दूत प्रेम रावत ने आज देहरादून के परेड ग्राउंड में हज़ारों श्रोताओं को सम्बोधित किया। प्रेम रावत जी ने देहरादून में पिछले कुछ वर्षों में आये बदलावों का उदाहरण देते हुए समझाया कि ₹इस संसार में सब कुछ बदल जाता है परन्तु जब तक तुम जीवित हो, तब तक स्वांसों का आना-जाना कभी नहीं बदलेगा। स्वांस का आना जाना ही बनाने वाले की कृपा है। इसलिए तुम इस स्वांस के साथ जुड़ना सीखो, तब तुम्हारी ज़िंदगी बदल जाएगी, अच्छी हो जाएगी। उन्होंने एक कहानी के माध्यम से समझाया कि ₹स्वर्ग और नरक यहीं हैं। जब तुम क्रोध और अहंकार में होते हो, तब तुम नरक में होते हो। जब तुम्हारा हृदय आभार और प्रेम से भरा होता है, तब तुम स्वर्ग में होते हो। अपने जीवन में स्वर्ग का अनुभव करो। उन्होंने आगे समझाया ₹एक होता है बाहर की आँखें खोलना और एक होता है अंदर की आँखें खोलना। जब अंदर की आँखें खोलोगे, तो वह दिखाई देगा जो अंदर है और हृदय आनंद से भर जाएगा। जो अविनाशी तुम्हारे अंदर है उसको समझो, उसको जानो और अपनी ज़िंदगी को सफल करो। यह है हमारा संदेश, ये सिर्फ शब्द ही नहीं हैं। उसका अनुभव करने की विधि भी हमारे पास है। उसे हम ज्ञान कहते हैं। प्रेम रावत ने यह भी बताया कि उनके सन्देश पर आधारित ₹पीस एजुकेशन प्रोग्राम₹ पूरी दुनिया में पाँच लाख से अधिक लोगों के जीवन में एक सुन्दर परिवर्तन लेकर आया है और कहा ₹आज वही संदेश हम तुम्हारे लिए लाए हैं ताकि तुम्हारे जीवन में भी वह बदलाव आए और तुम अपने जीवन का आनंद ले सको।₹ 1970 के दशक में एक बाल प्रतिभा और युवा आइकन के रूप में शुरुआत करने वाले प्रेम रावत ने लोगों को स्पष्टता, प्रेरणा और जीवन के प्रति गहरी समझ दी है। एक विश्व शांतिदूत की भूमिका के रूप में उन्होंने करोड़ों लोगों को प्रभावित किया है। आज उनका संदेश 110 से अधिक देशों में सुना जाता है, जहाँ वे हर व्यक्ति को आशा और शांति का संदेश देकर आंतरिक सुख और शांति का व्यावहारिक मार्ग दिखा रहे हैं। उनके कार्यों को दुनिया भर में सराहना मिली है, जिसमें (1) एक लेखक द्वारा अपनी पुस्तक (₹स्वयं की आवाज़₹) पढ़ने में सबसे अधिक उपस्थिति (114,704 लोग) के लिए, (2) एक सम्बोधन में सबसे अधिक दर्शको की संख्या (375,603 लोग) के लिए और (3) 'एक से अधिक लेखक पुस्तक वाचन' में सर्वाधिक दर्शको की संख्या (1,33,234 लोग) के लिए, तीन गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड शामिल हैं। ये तीनों रिकॉर्ड 2023-24 में स्थापित किए गए। उन्हें 20 से अधिक प्रमुख शहरों की सम्मान चाबियां और कई पुरस्कार मिले हैं, जिनमें 2012 का प्रतिष्ठित 'एशिया पैसिफिक ब्रांड लॉरिएट लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' शामिल है। इससे पहले यह अवॉर्ड नोबेल पीस प्राइज विजेता नेल्सन मंडेला और स्टीव जॉब्स को प्रदान किया गया है। एक लेखक होने के अलावा, प्रेम रावत ₹द प्रेम रावत फाउंडेशन₹ के संस्थापक भी हैं। यह संस्था भोजन, पानी और शांति जैसी बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य करती है। इसकी ₹जन भोजन₹ पहल भारत, नेपाल, घाना और दक्षिण अफ्रीका में प्रतिदिन जरूरतमंद बच्चों और बीमार वयस्कों को पौष्टिक भोजन प्रदान करती है। उनके व्याख्यानों पर आधारित ₹पीस एजुकेशन प्रोग्राम₹ 1,400 से अधिक शैक्षिक एवं अन्य संस्थानों में दिखाया जाता है, जिससे 5 लाख से अधिक लोगों को प्रभावित किया है। यह कार्यक्रम 1,000 से अधिक जेलों में भी चल रहा है, जिसके प्रभाव से कैदियों में दोबारा अपराध करने की संभावना कम पायी गई है।

निगाहे शोक़ में हां तुमको छुपा रक्खा है

जर्रे ज़र्रे में सरकार नज़र आ रहे हो तुम।
क्या बात है जो मुझको सता रहे हो तुम।

ये क्या ऐसे तो मुहब्बत हो जाएगी रुसवा।
राजे.सखियों को हमदम बता रहे हो तुम।

मुसलसल सरे महफ़िल न देखो हमको।
इश्क क्यों सब पर अयां कर रहे हो तुम।

निगाहे शोक में हां तुमको छुपा रक्खा है।
नाहक़ नक़ाब में खुद को छुपा रहे हो तुम।

हुस्न का जलवा है, ये जो में हुआ पागल।
इल्ज़ाम सारा हम पर क्यूं लगा रहे हो तुम।

बड़ी मुश्किलों से मुश्ताक़ तुमको भूलें हैं।
याद आआकर क्यों हमें रुला रहे हो तुम।

डॉ .मुश्ताक़अहमद शाह सहज़
हरदा मध्य प्रदेश .

सीखी हुई असहायता से मुक्ति: आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच से नया जीवन

लेखिका: सुश्री श्वेता झाम्ब
पुनर्वास मनोवैज्ञानिक एवं विशेष शिक्षिका

"आपकी पहचान आपके पिछले असफलताओं से नहीं, बल्कि दोबारा प्रयास करने के साहस से होती है। असहायता की जंजीरों को तोड़ें—आपका भविष्य अभी भी आपके हाथ में है।"

सीखी हुई असहायता क्या है?

क्या आपको कभी ऐसा महसूस हुआ है कि चाहे आप कितनी भी मेहनत कर लें, कुछ भी बदलता नहीं है? यह अनुभव सिर्फ किशोरों तक सीमित नहीं है—वयस्कों, पेशेवरों और अत्यधिक सक्षम व्यक्तियों को भी यह मानसिकता जकड़ सकती है।

सीखी हुई असहायता एक मानसिक अवस्था है जिसमें लगातार असफलता या अप्रत्याशित घटनाओं के कारण व्यक्ति यह मानने लगता है कि उसके प्रयास व्यर्थ हैं। यह मानसिकता व्यक्तिगत विकास, करियर, मानसिक स्वास्थ्य और पालन-पोषण तक को प्रभावित कर सकती है। लेकिन अच्छी खबर यह है कि इससे उबरना संभव है!

वास्तविक जीवन के उदाहरण: विभिन्न जीवन चरणों में संघर्ष

1. किशोर का दृष्टिकोण

आइए, आयशा की कहानी देखते हैं। वह एक मिलनसार लड़की थी, लेकिन मिडिल स्कूल में बहिष्कार और अस्वीकृति का सामना करने के बाद उसने दोस्त बनाने की कोशिश करना छोड़ दिया। हाई स्कूल पहुंचते-पहुंचते वह यह मान चुकी थी कि ₹कोई मुझे पसंद नहीं करता,₹ और न ही संबंध बनाने से बचने लगी।

2. युवा पेशेवर का दृष्टिकोण

रोहन, एक महत्वाकांक्षी युवा, कई बार नौकरी के लिए आवेदन करने के बाद अस्वीकृत हुआ। बार-बार की असफलताओं से वह यह मानने लगा कि चाहे वह कितनी भी मेहनत कर ले या नए कौशल सीख ले, उसे मनचाही नौकरी नहीं मिलेगी। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास खत्म होने लगा और उसने आवेदन करना ही बंद कर दिया।

3. माता-पिता या नेतृत्वकर्ता का दृष्टिकोण

प्रियंका, एक कामकाजी माँ, अपने बच्चे की परवरिश और नौकरी के बीच संतुलन बनाने में संघर्ष कर रही थी। उसने कई बार अनुशासन के अलग-अलग तरीके अपनाए, लेकिन कोई असर नहीं दिखा। आखिरकार, उसने खुद को ₹असफल माता-पिता₹ मान लिया और यह सोच लिया कि "मैं कितनी भी कोशिश कर लूं, मैं सफल नहीं हो सकती।"

सीखी हुई असहायता से मुक्ति: डॉ. अंकुर शरण द्वारा सुश्री श्वेता झाम्ब का विशेष साक्षात्कार

हमारी सोच और मानसिकता हमारे जीवन को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कई बार, लगातार असफलताओं या चुनौतियों के कारण हम यह मान लेते हैं कि हमारे प्रयास व्यर्थ हैं, और हम किसी भी बदलाव की उम्मीद छोड़ देते हैं। इस स्थिति को मनोविज्ञान में "सीखी हुई असहायता" (Learned Helplessness) कहा जाता है।

आज, हम इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करने के लिए पुनर्वास मनोवैज्ञानिक और विशेष शिक्षिका सुश्री श्वेता झाम्ब से बात कर रहे हैं। उनसे बातचीत कर रहे हैं डॉ. अंकुर शरण, जो मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं।

साक्षात्कार

डॉ. अंकुर शरण:

श्वेता जी, बहुत से लोग असफलताओं के कारण खुद को असहाय महसूस करने लगते हैं। इस मानसिकता को पहचानने और बदलने का पहला कदम क्या हो सकता है?

सुश्री श्वेता झाम्ब:

सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम नकारात्मक सोच को पहचानना और चुनौती देना है। जब कोई सोचता है कि ₹मुझे कभी सफलता नहीं मिलेगी₹ या ₹मैं कभी बदलाव नहीं ला सकता,₹ तो यह उनकी मानसिकता को और सीमित कर देता है। इस सोच को चुनौती देना जरूरी है। हमें अपने विचारों को इस रूप में बदलना चाहिए—₹मैंने अभी तक सफलता प्राप्त नहीं की है, लेकिन सही दृष्टिकोण और प्रयासों से मैं सफल हो सकता हूँ।₹

डॉ. अंकुर शरण:

सीखी हुई असहायता से बाहर आने के लिए ₹ग्रोथ माइंडसेट₹ अपनाने की बात की जाती है। यह कैसे मदद करता है?

सुश्री श्वेता झाम्ब:

₹ग्रोथ माइंडसेट₹ का अर्थ है यह मानना कि आपकी क्षमताएँ और बुद्धिमत्ता प्रयास से विकसित हो सकती हैं। स्टैनफोर्ड की मनोवैज्ञानिक कैरल ड्वेक के शोध में यह सिद्ध हुआ है कि जो लोग इस सोच को अपनाते हैं, वे चुनौतियों का डटकर सामना करते हैं और सीखने की प्रवृत्ति बनाए रखते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र गणित में कमजोर है और सोचता है कि ₹मुझे गणित नहीं आता,₹ तो वह कभी प्रयास ही नहीं करेगा। लेकिन यदि वह यह सोचे कि ₹अभी मुझे गणित में कठिनाई हो रही है, लेकिन अभ्यास से मैं इसमें सुधार कर सकता हूँ,₹ तो वह धीरे-धीरे बेहतर प्रदर्शन करेगा।

डॉ. अंकुर शरण:

अक्सर लोग बड़े बदलाव की सोचकर घबरा जाते हैं और प्रयास करना ही छोड़ देते हैं। क्या छोटे कदम भी इस समस्या को हल कर सकते हैं?

सुश्री श्वेता झाम्ब:

बिल्कुल! बड़े लक्ष्यों को छोटे-छोटे प्रभावी कदमों में बाँटना बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति सामाजिक डर का सामना कर रहा है, तो उसे शुरुआत में सिर्फ ₹नमस्ते₹ कहना या एक छोटी बातचीत करना चाहिए। इसी तरह, यदि कोई पेशेवर आत्मविश्वास बढ़ाना चाहता है, तो उसे बड़े मंच पर बोलने से पहले छोटे समूह में अपने विचार साझा करने चाहिए। जब हम छोटे लेकिन निरंतर प्रयास करते हैं, तो आत्मविश्वास धीरे-धीरे बढ़ता है और सीखी हुई असहायता से छुटकारा पाना संभव हो जाता है।

डॉ. अंकुर शरण:

कई बार लोग यह सोचते हैं कि उन्हें अकेले ही हर समस्या से जूझना होगा। आप इस धारणा पर क्या कहना चाहेंगी?

सुश्री श्वेता झाम्ब:

यह धारणा बिल्कुल गलत है। कोई भी व्यक्ति अकेले सफल नहीं हो सकता। हमें अपनी असफलताओं या संघर्षों को साझा करने में संकोच नहीं करना चाहिए। यदि आप कार्यस्थल में संघर्ष कर रहे हैं, तो अपने मेंटर्स या सहकर्मियों से मार्गदर्शन लें। यदि पेरेंटिंग में चुनौतियाँ आ रही हैं, तो पेरेंटिंग सपोर्ट ग्रुप्स या विशेषज्ञों की मदद लें। सहायता लेना कमजोरी नहीं, बल्कि एक सकारात्मक कदम है जो आगे बढ़ने में मदद करता है।

सीखी हुई असहायता से बाहर निकलना आसान नहीं है, लेकिन यह संभव है। इसके लिए नकारात्मक सोच को चुनौती देना, ग्रोथ माइंडसेट अपनाना, छोटे लेकिन प्रभावी कदम उठाना और सही मार्गदर्शन लेना बेहद जरूरी है। जीवन में असफलताएँ स्थायी नहीं होतीं—बल्कि वे हमें सीखने और आगे बढ़ने का मौका देती हैं।

विशेषज्ञ परिचय

डॉ. अंकुर शरण एक लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में कई पहल कर चुके हैं। वे ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओज़ के साथ मिलकर मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता पर काम कर रहे हैं और अपने लाइव वर्कशॉप तथा कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

सुश्री श्वेता झाम्ब

सुश्री श्वेता झाम्ब एक पुनर्वास मनोवैज्ञानिक और विशेष शिक्षिका हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता और व्यवहारिक परामर्श के क्षेत्र में कार्यरत हैं। वे ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओज़ के साथ मिलकर विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य परियोजनाओं को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा रही हैं। उनकी विशेषज्ञता लोगों को आत्म-विश्वास विकसित करने और जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद कर रही है।

ओडिशा के साथ विलय एक बड़ी गलती थी: बीजेपी बिधायक जयनारायण मिश्रा

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड
ओड़िशा

भूबनेश्वर : अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शनिवार को गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय सभागार में सुभद्रा योजना के तहत महिलाओं को सहायता की दूसरी किस्त वितरित करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि राज्य के पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री रवि नारायण नायक थे, जबकि विशिष्ट अतिथि संबलपुर के विधायक जयनारायण मिश्रा, जिला मजिस्ट्रेट सिद्धेश्वर बलिराम बोंडार और संबलपुर नगर निगम आयुक्त वेदभूषण थे।लेकिन इस बैठक में जयनारायण ने अपने भाषण में गंभीर आरोप लगाया कि राज्य सरकार पश्चिमी ओडिशा की अनदेखी कर रही है और यहां की भाषा और संस्कृति को नष्ट करने की साजिश कर रही है। इससे सभी लोग हैरान रह गए। उन्होंने शिकायत की कि कोसल और कलिंग जैसे क्षेत्रों की उपेक्षा और शोषण किया गया, जबकि केवल उत्कल को ही मान्यता दी गई। यह एक मानसिकता है, आप हमारा शोषण कर रहे हैं।वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने भी ओडिशा के सांस्कृतिक और राजनीतिक विमर्श में कोसल और कलिंग के प्रतिनिधित्व की कमी पर नाराजगी व्यक्त की है। हमने ओडिशा में एकजुट होकर बड़ी गलती की। उन्होंने कहा, यह हमारी ऐतिहासिक भूल थी और आने वाले दिनों में इसके विरोध में प्रदर्शन होंगे। संबलपुर के लोगों को पता होना चाहिए कि उत्कल का तात्पर्य कटक, पुरी और बालासोर से है। ओडिशा का गठन उत्कल, कोसल और कलिंग के विलय से हुआ था। हमारा शोषण किया जा रहा है। हमने ओडिशा में विलय के लिए आंदोलन में भाग लिया। लेकिन शायद यह हमारी सबसे बड़ी गलती थी। हालांकि उनके बयान से राजनीतिक बहस छिड़ गई है, लेकिन राज्य सरकार ने अभी तक उनकी टिप्पणियों पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया जारी नहीं की है।

भगोरिया के रंग में लोक-संस्कृति का संग बहुत अद्भुत है मध्यप्रदेश में

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

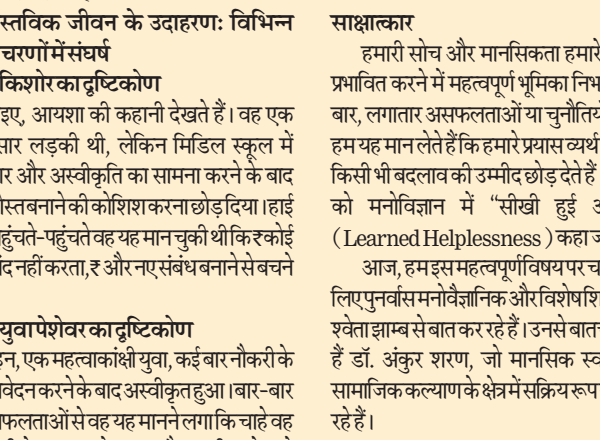

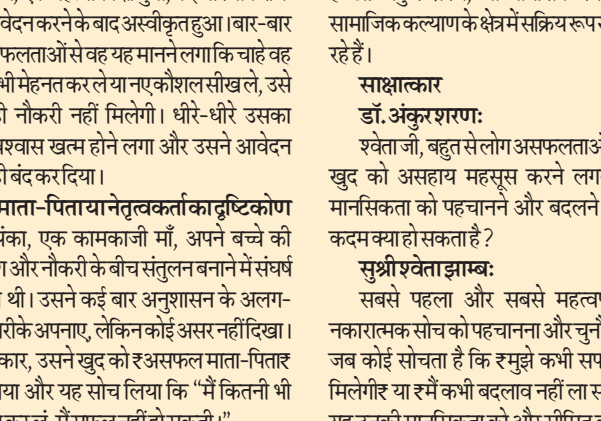

भगोरिया पर्व आदिवासी इलाकों के लिए बहुत बड़ा पर्व है। यहां मेला व हाट बाजार संस्कृति का अद्भुत रंग मध्यप्रदेश में देखने को मिलता है। सांस्कृतिक विरासत व परम्परागत लोक-संस्कृति का यह रंग वहीं मस्ती के साथ नव युगलों का अपना अलग रंग हैं। कहीं कुल्फी का आनंद लेती युवतियों वह ज्यूस पीने का अलग आदज सबसे जुदा है। लोक-संस्कृति के विभिन्न रंगों में मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र में इस पर्व को बहुत बड़ी तादाद में मनाते हैं। मध्यप्रदेश के झाबुआ आलीराजपुर टांडा धार आदि पश्चिम निमाड़ में इस की शुरुआत होली के सात दिन पहले से हो जाती है। भगोरिया उत्सव के अपने अलग-अलग रंग होते हैं। इस पर्व पर आदिवासी इलाकों में अपने अपने परिवार के पास हर एक आदिवासी जरूर पहुंच जाता है। इस पर्व से अपनापन बना रहता है और एकजुटता का एहसास करता है। रिश्तों में संस्कृति व परम्परा का यह अदभूत नजारे इस मेले में हाट बाजार में देखने को मिलता है। अब परम्परागत लोक-संस्कृति की पोशाक के साथ आधुनिकता का तड़का भी देखने को मिलता है। आदिवासी लोक-संस्कृति कला का प्रतिक यह भगोरिया का प्रसिद्ध मेले में सबसे ज्यादा उमंगता ढोल की थाप संग मांदल की गुंज से पश्चिम निमाड़ व झाबुआ धार अलिराजपुर जो मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल इलाके हैं, वह मानों दुनिया की सारी खुशियां में मस्ती के साथ सब झूम रहे होते हैं। आदिवासी गांव में भगोरिया की पुरानी परम्परा हिलोरें लेती है। नवयुवती झूले पर बेठकर सुख का आत्ममंथन करतीं हैं। होली के पूर्व आदिवासी अंचल में मनाएं जाने वाला सात दिवसीय पर्व की पारम्परिक शुरुआत होलष्टक से हो चुकी है। इस लोक उत्सव पर हर कोई आज़ाद सब का अपना अलग अंदाज बिल्कुल अलग रहता है। विभिन्न वेशभूषा में नाचते थिरकते आदिवासी भाई पूरे परिवार के साथ अलग रंग में दिखाई देते हैं। आदिवासी लोक-संस्कृति के पर्व भगोरिया पर आदिवासी इलाकों में विभिन्न रंगों की छटा भारतीय लोक संस्कृति का अलग आदज है।

झारखंड के खूंटी से पांच उग्रवादी गिरफ्तार ,आग्नेयास्त्र बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड
-झारखंड

रांची, चार दिन पूर्व पश्चिमी सिंहभूम में पुलिस के विरूद्ध बड़ी घटना को अंजाम देने के बाद पुलिस की सक्रियता अधिक बढ गयी है. सनद रहे कि सी आर पी एफ के 3 जवान आई ईडी ब्लास्ट से छोटानागरा इलाके घायल हुए थे. इस क्रम में पडोसी जिला खूंटी के उसी थाना अंतर्गत रोन्हे जंगल से पीएलएफआई के पांच उग्रवादी को गिरफ्तार कर रविवार को जेल भेजा गया. गिरफ्तार सदस्यों में इटकी थाना क्षेत्र के तरगढ़ी गांव का पवन कुमार ऊर्फ पवन महतो और करमा बारला, रामगढ़ निवासी सेंटू सिंह, पतरातू थाना क्षेत्र के हेहल बारकाकाना निवासी अभय कुमार सिंह ऊर्फ अमन सिंह और दीपक मुंडा शामिल को सलाखों में डाला गया

झारखंड पुलिस को जानकारी मिली थी कि उग्रवादी जंगल में बैठक कर बड़ी घटना को अंजाम देने वाले हैं जिसपर से समय पुलिस ने एक्सन लिया है.

पुलिस को इनके पास से एक कारबाइन (मैगजीन के साथ), एक गोली, छह पीएलएफआई का पर्चा, चार मोटरसाइकिल, पांच मोबाइल फोन और एक बैग बरामद हुआ है. एएसपी क्रिस्तोफर केरकेट्टा ने रविवार को कर्रा थाना में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में जानकारी देते हुए बताया कि खूंटी जिले के पुलिस अधीक्षक अमन कुमार को सूचना मिली थी कि रोन्हे जंगल में पीएलएफआई के सदस्यों द्वारा संगठन के विस्तार करने, लेवी मांगने और फायरिंग करके ठेकेदारों के बीच भय उत्पन्न करने के उद्देश्य से बैठक करने वाले हैं. सूचना के अलोक में एसडीपीओ क्रिस्टोफर केरकेट्टा के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया. इसके बाद इस टीम ने रोन्हे जंगल में छापेमारी कर पांच पीएलएफआई उग्रवादी को गिरफ्तार कर लिया. इनमें से पवन कुमार ऊर्फ पवन महतो, सेंटू सिंह और दीपक मुंडा का पूर्व से आपराधिक इतिहास रहा है.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023